गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता

ब्रह्मविद्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता

लेखकः ब्रह्मविद्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

विषय सूची

1) साधना में स्थितियाँ 3

2) जो श्रद्धा साधक को होनी चाहिए 8

3) आत्मज्ञानि बनना है तो ? 17

4) सत्य, धर्म कब नाश होंगे ? 22

5) परा प्रकृति – अपरा प्रकृति 29

6) बुद्धि के लक्षण 38

7) ''मानवों में कितने तरह होते हैं'' 57

8) परोक्ष ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान में बदलना हो तो ? 59

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ................................. Rs.80/-
3) ज्ञान माला... Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................. Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?............ Rs.60/-
6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
7) महात्माओं का संदेशों................................ Rs.50/-
8) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
10) शाकाहार ही मानव का आहार है !............... Rs.50/-

गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता

गुरु पूर्णिमा इस प्रपंच में सारे गुरुओं का ही जन्मदिन है। क्योंकि गुरु पूर्णिमा का दिन प्रपंच को ज्ञान देने वाला श्री व्यास भगवान का जन्मदिन है। तब तक इस ज्ञान को गुरु और शिष्यों को मौखिक रूप से बताते थे, मतलब वॉक द्वारा उनसे अध्ययन करवाते थे।

ऐसे समय इस कलियुग में लोगों को अज्ञानता के वजह से, अशांति से, दुख से पीड़ित रोगों होंगे करके, अपनी दिव्य दृष्टि से पाराशर महर्षि ने देखा, और समझा कि इस कलियुग के लिए इस ज्ञान को पहुंचाना चाहिए। इसलिए अपना संकल्प से एक पुत्र को जन्म दिया। इस पाराशर महर्षि कौन है ? मतलब, वशिष्ठ महर्षि का पुत्र शक्ति, और शक्ति का पुत्र पाराशर महर्षि है। पाराशर महर्षि और मत्स्य गंधी का पुत्र ही व्यास भगवान है।

सबसे पहले परमात्मा ने इस पूरा ज्ञान ब्रह्मदेव को शब्द रूपेण सुनाया था। क्योंकि वह शब्द रूप में सुना था, उनको श्रुतियां कहलाते हैं। इस ज्ञान, श्रुतियों में मानव लोग कलियुग में नहीं समझेंगे करके पाराशर महर्षि ने ग्रहण किया। तब व्यास जी द्वारा उन श्रुतियों को चार विभागों में विभाजन किए हैं और उन्हीं को ''वेदों'' नाम दिया है।

''वेदों'' का मतलब ज्ञान है । पूरा वेदों को चार विभागों में किए हैं। 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद।

1.ऋग्वेद में पूरा सृष्टि में क्या-क्या है और वह कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? इनके बारे में कहा गया है।

2.यजुर्वेद में यागों और यज्ञों को कर कर कैसे प्राप्त कर सकेंगे ? इनके बारे में कहा गया है।

3. सामवेद में कई सारे आध्यात्मिक विषयों के बारे में बताया गया है। मतलब भगवान कौन है ? कैसे पहुंच सकते हैं ? और इस प्रापंचिक जीवन

में जितना भी प्राप्त कर लो, केवल परमात्मा पाने से ही परिपूर्ण जीवन है। वही मानव जीवन का परमार्थ है, और लक्ष्य है। इसके बारे में बताया है। परमात्मा को पहुंचने का अवसर किसी और जीव को नहीं है, सिर्फ मानव को ही है। यह विषय सामवेद में कहा गया है।

शुरुआत में वेदव्यास जी ने सिर्फ इन तीन वेदों को ही लिखा था। लेकिन उन दिनों बहुत युद्धों होते थे, और राक्षसों बहुत बलवान होते थे, और देवताओं हार जाते थे। तब राक्षसों को हराने के लिए देवताओं ने व्यास भगवान जी को पूछने के बाद, उन्होंने सारे अस्त्र और शास्त्र विद्या को लिखा था। अथर्ववेद में पूरा युद्ध नीति, वैद्य चिकित्सा, मतलब एक मंत्र पढ़ने से उस बाण काम करता था।

लेकिन महाभारत युद्ध आने के बाद श्री कृष्ण ने इस मंत्र विद्या को बंद कर दिया था। क्योंकि कलियुग में मानव को स्वार्थ ज्यादा होता है, श्री कृष्ण को यह बात मालूम है। उस विद्या को उपयोग कर कर सारा सृष्टि को ही सर्वनाश कर देंगे करके, उस मंत्र विद्या को बंद कर दिया है।

और व्यास भगवान ने ऐसे वेदों को लिखकर नहीं चले गए थे। वह अपने शिष्यों द्वारा प्रचार करवाया था । ऋग्वेद पैलु द्वारा, यजुर्वेद वैशंपायन द्वारा, सामवेद जैमिनी महर्षि द्वारा, अथर्ववेद सुमंत द्वारा, ऐसे चार वेदों को चारों ओर को भेजा था।

लेकिन अपने दिव्य नेत्र से व्यास भगवान देखा कि इन चार वेदों को लोग पढ़कर ज्ञानी नहीं बन रहे थे। तब अष्टादश पुराणों में, मतलब कथाओं के रूप में उस पूरी ज्ञान को रखा था। तब उन अष्टादश पुराणों को सूत महर्षी ने नैमिष में अपने शिष्यों को बोध किया है और प्रचार करवाया था।

लेकिन आजकल नैमिष जाकर लोग वहां के मंदिरों का दर्शन करते हैं। लेकिन पुराणों द्वारा व्यास भगवान का ज्ञान को नहीं जान रहे हैं। उस ज्ञान धीरे-धीरे भूल रहे हैं। लेकिन जब इस ज्ञान को व्यास भगवान बता रहे थे, और गणपति लिख रहे थे, तब गणेश जी ने पूछा था कि यह सब किस लिए

लिख रहे हैं ? इनका सारांश क्या है ? इस का मतलब "**परोपकाराय पुण्य है और परपीड़न पाप है**" को कहा था।

मतलब किसी भी युग में, कभी भी, कहीं भी, दूसरों को उपकार करना से ही धर्म रहेगा और दूसरों को पीड़न करने में अधर्म बढ़ेगा। यह बात कहा था। इस तरह बहुत ज्ञान दिया था। लेकिन उनका आचरण करने वाले नहीं थे। तब व्यास भगवान इतना सारे करने के बाद भी उनको संतुष्ट नहीं हुआ था। तब नारद मुनि ने उनको महाभारत लिखने को कहा था, उसी में है भगवत गीता।

तब भागवत गीता द्वारा लोगों को कैसे जीना है ? क्या खाना चाहिए ? कैसे व्यवहार रहना चाहिए? जब तक परमात्मा को पहुंचेंगे नहीं, तब तक मानव लोगों को शांति नहीं मिलेगा, का बात बताना चाहा। इस प्रकार नारद को कहने पर महाभारत लिखा था। इसीलिए महाभारत को पंचम वेद कहलाते हैं। जितना ज्ञान वेदों में है, उतना ही ज्ञान भागवत गीता में है।

मानव लोग इन पुराणों को टाइम पास के लिए पढ़ रहे हैं। पारायण करने को समझ रहे हैं। लेकिन उसको आचरण करने वाला ग्रंथ नहीं समझ रहे हैं। मतलब हमारा ज्ञान और बुद्धि कितना नीचे हो गया है, समझिए। उनका उद्देश्य क्या था और हम क्या कर रहे हैं ? जब सोचेंगे तब समझ आता है कि कितना अल्प जीव बन गए हैं हम सब! तब इस तरह प्रचार कर कर दुनिया को निरंतर ज्ञान देने वाला व्यास भगवान का जन्मदिन ही, ज्ञान सिखाने वाले सारे गुरुओं का जन्मदिन है।

तब व्यास भगवान सिर्फ रचना करके नहीं छोड़ा है, अपने शिष्यों द्वारा प्रचार भी करवाया था। और पत्री जी भी ज्ञान बोध करने के बाद सबको प्रचार करने के लिए कहा था। ऐसे प्रचार करने से दो लाभ मिलते हैं । (1)बताने वाला शिष्य को ज्ञान का मनन होगा, (2)नए लोगों का श्रवण होगा।

ऐसे ही पत्री जी ने सिर्फ सत्य को बता कर नहीं छोड़ा। मतलब

भगवान कौन है, बता कर नहीं छोड़ा। उसने धर्म क्या है भी बताया है। दूसरों पर हिंसा करना पाप है और दूसरों को अच्छा करना पुण्य है, जैसे व्यास भगवान ने कहा है, वैसे ही पत्री जी ने भी कहा था। न केवल मानव लोग, सारे प्राणियों पर हिंसा मना किया था, क्योंकि वह भी आत्म स्वरूप ही है। मतलब न केवल अपना पूरा जीवन जीना है, दूसरे प्राणियों को अपना पूरा जीवन जीना देना है। किसी भी जीव आधा आयुष या अल्प आयुष से नहीं मरना चाहिए को कहा था।

भूमि पर अत्यंत शक्तिशाली जीव मानव ही है, लेकिन इस कलियुग में ज्ञान नहीं पाने पर, बुद्धि विकास नहीं कर कर, बुद्धि को गलत इस्तेमाल कर रहे हैं, हिंसा कर कर अपनी शक्ति को खो रहा है। इसीलिए पत्री जी ने सबसे पहले अपने खाना पर नियंत्रण रखने को कहा है।

बुद्धा ने भी शाकाहार के बारे में बताया है। कोई भी जीव नहीं मरना है करके, आखिर में यज्ञों को भी बंद करवाया था क्योंकि उसमें भी जानवरों का हिंसा हो रहा है। ऐसे मलयाल स्वामी जी ने भी बहुत लडा था।

तब बुद्धा, मलयाल स्वामी, अब पत्री जी भी हिंसा मना किया है, क्योंकि ऐसे आहार खाने से ज्ञान खो रहा है, और पशु का लक्षणों को अपना रहे हैं।

जब आप शाकाहार खाते हैं, बुद्धि बढ़ाते है, तब न केवल सोना, खाना, पीना है, और साथ में ज्ञान प्राप्त करना मानव का लक्ष्य है को जानकर, पशु तत्व से पशुपति बनने का प्रयत्न करेंगे। मांसाहार खाने से दोनों स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर, दोनों ही खराब होते हैं। स्थूल शरीर रोगों से और सूक्ष्म शरीर में अशुद्ध मानस तैयार होता है। क्योंकि "जैसे अन्न, वैसे मन"को कहा है। अगर सही आहार नहीं खाएंगे, तब सही व्यवहार नहीं रहता है।

मानव का मानस मांसाहार खाने से और अशुद्ध होने से, राक्षसों का गुणों के वजह से, तमो और रजोगुण अधिक होते हैं। इन दोनों गुणों के वजह से एक मानव, माधव जैसे नहीं रहकर, एक राक्षस प्रवृत्ति के साथ, मतलब,

स्वार्थ, अहंकार, अपना सुख के लिए दूसरों को पीड़न करने का भाव से ही, जी रहा है।

आजकल दुनिया में कितना स्वार्थी बन गए हैं। सिर्फ धनेषणा, धारेषणा, पुत्रेषणा, मतलब पैसे के ऊपर, पत्नी पर, बच्चों पर ही ध्यास है। उसके अलावा परहित के लिए कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।

जो भी शाकाहार खाते हैं, उनको आत्म शक्ति बढ़ता रहता है। और जो भी दूसरों जीवों को हिंसा कर कर मांसाहर खाते हैं, उनके आत्मा शक्तिहीन होता है।

कहीं भी कोई वेदों में या उपनिषदों में भी मांसाहार को खा सकते हैं को नहीं लिखा है, नहीं कहा है। वह सिर्फ क्षुद्ध देवताओं को प्रीति है को कहा गया है। भगवत गीता में ''ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणाम'', को कहा गया है। तब इस ज्ञान को क्यों बढ़ाना है ? क्योंकि उससे पहले जन्मों में बहुत कर्मों किए हैं, और उनके वजह से परमात्मा का दर्शन नहीं होगा। इस ज्ञान को बढ़ाना चाहिए। कौन सा ज्ञान ? मैं आत्मा हूँ, सृष्टि में हर जीव भी आत्म स्वरूप ही है, सृष्टि पूरा इस चैतन्य से ही चल रहा है, मैं तो कुछ है नहीं, सब कुछ परमात्मा ही है का ज्ञान पूरी तरह पाने के बाद, किसी को भी देखने पर, सिर्फ भगवान ही याद आती है। जब सब जीव आत्मा स्वरूप ही है का ज्ञान आप पाते हैं, तब आपके कर्मों दग्ध हो जाते हैं।

इसीलिए योग अग्नि, ज्ञान अग्नि को बढ़ाने वाले सिर्फ मानव है। बाकी सब भोग जीवो हैं।

यह सब कुछ हम कैसे जान सकते हैं ? व्यास भगवान ने लिखा कर चले गए हैं। उनका अध्ययन करने वाला सबसे आगे बढ़कर रहा है। जो अध्ययन करने को आलसी करता है, वह कर्मों को अनुभव कर कर दुख में ही रह जाता है।

इस ध्यान में आने वाले लोग, योग अग्नि और ज्ञान अग्नि को प्राप्त कर कर, योग द्वारा परमात्मा को पाने के लिए एक गुरु द्वारा मालूम कर कर,

नित्य योग साधना करते हैं।

एक मंदिर बनाकर उसमें अखंड ज्योति जलाते हैं। बाद में पुजारी लोग एक के बाद दूसरा, उसमें तेल लगाकर उसको जलाते ही रहते हैं। बाद में दूसरे लोग भी ऐसे करते आए हैं। इसी तरह पत्री जी ने भी यह ध्यान और ज्ञान का अखंड दीप को जलाया है। उसको श्री राघव राव जी ने अपना ज्ञान बोध नामक तेल, द्वारा हर रोज उसको जलाकर रख रहे हैं।

इसी तरह हमें भी अखंड ज्योतियां जैसे रहना चाहिए, बुझने वाले ज्योतियां जैसे नहीं रहना है। हर रोज ध्यान साधना कर कर, ज्ञान बढ़ाकर एक अग्नि जैसे जलते रहना चाहिए। इस योग अग्नि और ज्ञान अग्नि कभी भी बुझने वाले नहीं है। इस ज्ञान हम तक पहुंचा है मतलब, व्यास भगवान का भिक्षा है।

लेकिन ऐसा सोचना कि आध्यात्मिक विद्या महान है और प्रापंचिक विद्या बेकार है, यह सिर्फ मूर्खतापन होगा। परा विद्या और अपरा विद्या, दोनों महान है। दोनों विद्या रहने वालों को ही आत्मज्ञान, ब्रह्म ज्ञान पाने का अर्हत है। ऐसे कहा है व्यास भगवान । क्योंकि अपरा विद्या नहीं सीखने से परा विद्या में महान नहीं बन सकते हैं।

ज्ञान मार्ग में आकर सत्य को नहीं जानकर, ज्ञान को नहीं जानकर, जो भी दिया गया है को नहीं जानकर, बिना सोचे, जो कुछ भी बोलने से, वह भी कर्म होता है। पत्री जी कहते हैं कि, जो भी इस सृष्टि में है, वह सभी सही है। आपको जो इस्तेमाल करना है और नहीं करना है, को जानकर, तब प्रवर्तन करना चाहिए। जिसको ज्ञान बढ़ा है, उनको किसको ? कैसे ? सही इस्तेमाल करना जानता है। जिसको ज्ञान नहीं है, वह अंधविश्वास में अनुकरण करता है। ऐसे कहते हैं पत्री जी।

मैं आत्मा हूँ, आत्मा शक्ति और आत्मा का चैतन्य ही इस पूरी सृष्टि को चला रहा है। इस परम सत्य को परलोकों पहुंचने तक भूलना नहीं चाहिए। वहां पर शरीर नहीं, आत्मा ही जाता है, का याद रखना चाहिए।

यह शरीर, इस आत्मा केलिए, एक उपकरण ही है। यह उपकरण आप नहीं है। जब तक परलोक जाएंगे, इस उपकरण को सही रखकर, उपयोग कर कर, आज का स्थिति से उच्च स्थिति जाने के लिए ही दिया गया है।

अगर उसको गलत इस्तेमाल किया है, तब आप आत्महंतक बन जाएंगे। उसको सही उपयोग करने से महान बनेंगे, देव बन जाएंगे। यह शरीर को आत्मा ने लाया है। इस पर कभी भी निर्लक्ष्य नहीं रहना चाहिए। उसको बहुत प्यार से, और अच्छी तरह रखने से, आप साधना कर कर, योग अग्नि और ज्ञान अग्नि को बढ़ाकर, आत्मा को देव के पास लेने का मार्ग बना सकते हैं।

क्योंकि कर्मों रहने पर नहीं जा सकते हैं, ज्ञान द्वारा कर्मों को दग्ध करने की शक्ति मिलती है। यह केवल एक मानव को ही दिया गया वरदान है। इनको सही इस्तेमाल कर कर, साधना करने से, ज्ञान बढ़ाने से, और कुछ महान वरदान कुछ नहीं है। जीवन में जितना भी करोड़ों हो, उतना आनंद नहीं होता जितना ध्यान साधना में होगा।

तब इस सत्य को जानने का अवसर देने वाला व्यास भगवान को, हमें बताने वाला गुरुजी को, कोटि–कोटि नमन है।

इस कलियुग में सब लोग जो ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, केवल व्यास भगवान द्वारा बताया गया उपनिषदों, ब्रह्म सूत्रों, अष्टादश पुराणों, महाभारत, से ही पा रहे हैं। प्रपंच को ज्ञान देने वाला व्यास भगवान का जन्मदिन सब लोग खुशी से मनाना चाहिए। इसलिए यह एक त्यौहार का भावना है। इसलिए सारे ज्ञानियों को गुरु पूर्णिमा मतलब व्यास पूर्णिमा बड़ा सा त्यौहार है।

इसलिए दुनिया में गुरु पूर्णिमा पर सब लोग व्यास भगवान को याद करते हैं और गुरु पूर्णिमा मनाते हैं।

मूर्खता से मुमुक्षत्व की ओर!

हम लोग कहां से कहां जा रहे हैं ? जन्म के समय जीव जैसे, कैसे रहते हैं ? तब कौन सा प्रयत्न कर कर देव बन रहे हैं ? मूर्खता से मुमुक्षत्व में कैसे आएंगे ? असलियत में मूर्खता कब आएगा ? उसमें से कैसे निकालेंगे और कब ? यह सारे विषयों अभी जानते हैं।

एक आत्मा परमात्मा से विभाजन होकर भूमि पर आकर कई प्रकार के जन्मों लेकर आखिर में मानव जन्म लेती है। तब मानव जन्म लेकर कैसे रहेंगे ? जैसे कि यह प्रपंच शाश्वत है, शरीर शाश्वत है, समझकर अहंकार और अज्ञानता से प्रवर्तन करते हैं। जितना ज्यादा अहंकार और अज्ञानता रहेगा, उतना परम मूर्खत्व के साथ रहेंगे। लेकिन वह लोग ऐसे ही नहीं रहेंगे। उनका विचार भी बदलता रहता है। इसीलिए हर एक जन्म बढ़ोतरी के लिए ही है, ऐसे कहते हैं गुरुओं ने।

अपने जीवन में पहले प्रापंचिक विद्या सीखते हैं। उसे डिग्रियां मिलते हैं। पदों मिलते हैं, संपत्ति मिलता है, लेकिन मूर्खता नहीं जाएगा। लेकिन पूर्व जन्म सुकृति होगा तो, इस स्थिति को पार कर सकते हैं।

यह वर्तमान का स्थिति नहीं है। कोई भी जो आध्यात्मिकता में आए हैं, मतलब जरूर पूर्व जन्म सत्कर्म का फल ही है। अगर पुण्य कर्म फल नहीं होता तो नहीं आएंगे। परम मूर्ख भी मोक्ष स्थिति एक ही जन्म में पा सकते हैं, इस बहुत को बहुत लोग इस भूमि पर दिखाए हैं।

अगर देखेंगे तो इस मध्यकाल में वेमना जैसे, या त्रेता युग में वाल्मीकि जैसे, हमें इस विषय का समझ आता है।

रत्नाकर को पढ़ाई नहीं था, बहेलिया, चिड़ीमार था। वह अपनी अज्ञानता में बहुत गलतियां किया है। लेकिन नारद मुनि का बोध करने के बाद, महान ऋषि बन गया था। वाल्मिकी महर्षी बना है।

जन्मतः सब लोग अज्ञानता में रह सकते हैं, कई सारे गलतियां कर सकते हैं। यहां पर गलतियां मतलब अपने स्वार्थ के लिए दूसरे लोगों को दुख देना और ऐसा करना गलत भी नहीं समझते हैं। लेकिन जो आपको गलत लगता है, दूसरों को सही लग सकता है, और जो आपको सही लगता है दूसरों को दुख दे सकते हैं। लेकिन एक गुरु आने के बाद ही सत्य जानने का अवसर मिलता है। उस गुरु आने से पहले असत्य में जीते हो, वही सत्य है का भ्रम में रहते हुए..... अज्ञानता को नहीं निकालते हैं।

लेकिन पूर्व जन्म सुकृति के वजह से हमारे जीवन में गुरु आने के बाद अगर आत्मा विद्या सीखते हैं, वही आखिरी जन्म होगी। इसलिए उनको गुरु माने, जिससे आपको नए विषयों बताते हैं।

जीवन में गुरु आने के बाद सत्य को समझेंगे। लेकिन सत्य को दर्शन करना है तो, सबसे पहले अपना जीवन में साधना रहना चाहिए। क्योंकि हर एक मनुष्य अपना मनस के हिसाफ से ही प्रवर्तन करता है। मतलब मानस जो भी कहता है, वही करेगा। उस मानस जब प्रपंच की ओर रहता है, लोक वासनाएं से मानस गंदा होता है। जब तक यह लोक वासनाएं रहता है, स्वार्थ ही रहता है। दूसरे लोगों के बारे में सोचते नहीं है।

इतना ही नहीं, यह गंदा मानस अरिशठ वर्गों से स्थूल बन जाती है, मतलब इस मानस बढ़ाते बढ़ाते, बड़ा बन जाता है। जितना ज्यादा मानस प्रपंच की ओर रहता है, जितना ज्यादा इच्छाएं रखते हैं, जितना ज्यादा अरिशठ वर्गों का गुलाम रहते हैं, मानस उतना स्थूल रहता है।

पूर्व जन्म पुण्य के वजह से गुरु आने के बाद, स्थूल मानस, स्वच्छ और सूक्ष्म बनने से ही, आप कौन है का विषय जानेंगे।

तब गुरु के पास आने के बाद सबसे पहले आपको संयम रखना चाहिए। मतलब हम अपने ऊपर कठिन रहना चाहिए। दूसरों के साथ उदारता रहना चाहिए। क्यों हम अपने साथ कठिन रहना चाहिए? नहीं तो हमें इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं रहेगा। इंद्रियों का नियंत्रण किस लिए? मतलब इंद्रियों के

वजह से ही मानस स्थूल बन गया है।

अभी हमें जो नहीं दिखने वाला विषय को एक बार भी नहीं देखेंगे तो, मानस बहुत सुकून रहता है। अगर ऐसा जो नहीं देखने वाला विषय को देखकर, इसके बारे में 10 लोगों से बात कर कर, उन विषयों को अगर कोई बता रहा है, और सुनाते है, तब सूक्ष्म मानस स्थूल बन जाती है। यह ध्यान के लिए रुकावट है। इसीलिए गुरु सबसे पहले क्या कहता है ? यह इंद्रियों का नियंत्रण रहना चाहिए। मतलब कुछ भी नहीं देखना नहीं।

जो नहीं देखना है वह मना है, जो नहीं सुनने वाला विषय है उसको सुनना नहीं, जो भी बात नहीं करना है वह मना है,और जो नहीं खाने वाला विषय वह नहीं खाना है। ऐसे कुछ नियमों को पालन करना चाहिए। कारण मानस प्रपंच की ओर रहकर स्थूल बन जाती है, तो उसको सूक्ष्म बनाना है। इंद्रियों के वजह से ही मानस स्थूल बन गई और उनके वजह से ही अरिशठ वर्गों को कम नहीं कर पा रहा है। अगर इनका कम करना है, तो इंद्रियों का संयम रखना है।

उस इंद्रीय संयम को पालन करने को अपने आप से कठिनाई से व्यवहार करना चाहिए। क्यों कि प्रपंच की ओर रहकर आप खुश नहीं है। आनंद रहने के लिए, अपना स्वरूप को जानने के लिए, कठिन रहना चाहिए गुरु को मिलने से, सबसे पहले कहता है कि आप शरीर नहीं है, आप आत्मा है। आत्मा ही भगवान है, वह भगवान आप ही है। इतने सारे विषयों बताने से भी, हमें यकीन नहीं रहता है क्योंकि उस मानस के गुणों कि वजह से, स्थूल मानस की वजह से ही है।

इसलिए गुरु अपना आहार को सावधान रहकर खाना है को कहता है। क्योंकि खाना से ही मानस बनती है। इसलिए इंद्रिय का नियंत्रण में सबसे पहले आहार है। जितना ज्यादा सावधान रहेंगे उतना ज्यादा स्वच्छ बनेगा मानस। स्वच्छ मानस का मतलब, जरूरत पड़े तो, खुद को कष्ट उठाकर दूसरों को कभी कष्ट नहीं देना है। यह महात्माओं का लक्षण है।

अपना आनंद के लिए दूसरों को कष्ट देना मूर्खता का लक्षण है। इसलिए यहां तक आने से ही सबसे पहले अपना मानस को सीमित करना। वाक को नियंत्रित करना है, सही आहार लेना है, और सही व्यवहार होना चाहिए। यही इंद्रीय संयम है।

इसी प्रकार साधना करते वक्त, दृढ़ निश्चयता और सहनशीलता रहना चाहिए। यह सभी उच्च स्थिति पहुंचने का मार्ग को सहकार देते हैं। साधना करते वक्त और ज्यादा करने को सोचना है, लेकिन संतुष्टि नहीं रहना चाहिए। संतुष्ट रहने से आलसी तत्व आ जाती है। कभी–कभी साधना बहुत कष्ट देता है। लेकिन उस कष्ट को इष्ट में बदलना चाहिए।

आध्यात्मिक योग में प्रवेश करना मतलब इंद्रिय संयम, दृढ़ निश्चयता, सहनशीलता, यह सभी आदत रखना चाहिए। तभी साधना में अच्छी तरह आगे बढ़ेंगे। जब भी आप बाहर से अंदर में आए हो, तब आत्मा को जानने का और पहुंचने का प्रयत्न कर रहे हो। आध्यात्मिक मार्ग मतलब आपका मानस आत्मा के साथ अनुसंधान करने का कोशिश कर रहे हैं।

यहां पर मानस, आत्मा का मिलन ही आत्म योग है, आध्यात्मिक योग कहलाते हैं। बाहर की तरह रहने वाला मानस को अंदर की ओर लेकर जाना ही आध्यात्मिक योग में आना। यह लोग बाहर के विषयों को कम कर कर, इंद्रिय संयम पालन करते हुए, दृढ़ निश्चयिता के साथ ध्यान करना, और गुरु के बातों सुनकर और आगे बढ़ने पर, उनमें धीरे–धीरे दुर्गुणों निकलकर, अच्छे गुणों प्रवेश करते हैं।

अच्छे गुण प्रवेश करना मतलब स्वार्थ निकल जाएगा और त्याग बुद्धि आती है। मतलब मैं क्यों करूं का स्वार्थ गुण रहने वाले, सर्व जीवों का सेवा ही सर्वेश्वर का सेवा को जानकर, त्याग बुद्धि से जीते हैं। ऐसे सेवा मार्ग में रहने से ही भगवान का कृपा मिलेगा को जानकर, सेवा, प्रेम, त्याग जैसे गुणों का आदत होकर, उनमें अरिशठ वर्गों भी शांत होंगे। शांत रहना मतलब नहीं होना नहीं है, सीमित रहना। जब जरूरत पड़े उन्हें इस्तेमाल करना है। हर

छोटी बात पर नहीं रहने से, आप आध्यात्मिक मार्ग में आगे चलेंगे।

एक बात में कह सकते हैं कि बाहर की तरफ रहने वाला मनस को अंदर आत्मा की ओर रखना ही है। इस प्रकार मानस को भिन्नत्व से एकत्व की ओर लाते हैं। मतलब जब सृष्टि को देखते हैं तब सब भिन्नत्व होगा, लेकिन आत्मा की ओर मोड़ने पर एकत्व होता है, सब एक ही है, आत्मामय है, का समझ आता है। जब रूपों को देखते हैं मनस भिन्नत्व में रहती है। लेकिन उन रूपों के पीछे चैतन्य को देखने पर एकत्व में आएंगे।

योग मतलब मिलावट है, मानस को आत्मा में लीन होना। तब वह मानस नहीं रहेगी। आत्मा बनकर रह जाता है। इसीलिए जो कोई सेवा मार्ग में है, आध्यात्मिक विषयों बोध करते हैं, आध्यात्मिकता में उच्च स्थिति मिलेगा। उतना ही नहीं आप खुद ही भगवान है को जानना चाहिए, आत्म दर्शन पाना है को बताने पर, ऐसे कर्मों करने पर, वह आत्मा की तरह जी रहा है, और उनके सारे कर्मों आत्मा का उन्नति प्राप्त करने वाले ही है, का बात समझ आता है।

अगर यह सभी पाना है तो, गुरु का दिया साधना, आचार्य सांगत्य, स्वाध्याय, सेवा, यह सारे जरूर पालन करना चाहिए ,तभी मोक्ष स्थिति पाएंगे। कोई भी बातों बताएंगे, पंडित लोग भी बहुत प्यार से बताते हैं। लेकिन बातों से नहीं, बल्कि आचरण से ही मोक्ष स्थिति पहुंचेंगे। इसलिए पत्री जी ने कहा है कि, ‘‘जो आचरण करता है और दूसरों से आचरण करवाता है, वही आचार्य बनेगा’’।

इसलिए जो बातें हैं, आप आचरण करते हैं, वही आप दूसरों को बताना है। बताना बहुत आसान है, लेकिन सारे बताने वाले आचार्य नहीं बन जाते हैं। केवल आचरण करके तब बताने वाला ही आचार्य बनते हैं। इसलिए ‘‘आचार्यों’’ का शीर्ष ऐसे नहीं दिया जाता है। इसलिए बहुत बढ़ गए हैं को मत सोचना है। जो गुरु ने बताया है,कितना आचरण किया है ? सारे विषयों को आचरण कर रहा हूँ या नहीं को पूछिए। अगर आचरण कर रहे हो, तब

बताइए दूसरों को, नहीं आचरण करने वाले बातों पर विश्वास नहीं रहेगा और उनका कुछ सम्मान नहीं रहेगा।

इसलिए श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि मोह क्षय ही मोक्ष है। जब तक मोह रहेगा, दुख रहेगा। जब भी आप मोह रहित स्थिति में है, तब आप दुख रहित स्थिति पाएंगे। तब इस मोह, बंधन से ही उत्पन्न हो रहा है। मैं और मेरे लोग का बंधन जाना चाहिए, मेरा शरीर, मेरे खून के रिश्तो से ज्यादा उछलना नहीं चाहिए।

कारण बंधन शाश्वत नहीं है। मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, कहता है गुरुजी। जो मैं आत्मा हूँ, मुझे किसी से संबंध नहीं है को सोचना चाहिए। क्योंकि ? अगर अपने को शरीर मानते हो तब दुख रहता है, नहीं तो अगर आत्मा मानते हो तब दुख रहित स्थिति पहुंचेंगे। अगर आत्मा समझेंगे तब सब कुछ छोड़ सकेंगे और शरीर समझेंगे तो सब कुछ पकड़ेंगे ।

जबकि सत्य को मालूम है, फिर भी क्यों नहीं पा रहे हैं ? क्योंकि आपको कहीं तो थोड़ा शक है। गुरु के बातों पर, सत्य पर, शक है। हृदय पूर्वक आप भगवान को प्रेम नहीं करते हैं। ''लोगों क्या समझेंगे, क्या सोचेंगे, आप वही कर रहे हैं, लेकिन लोकेश्वर क्या समझते हैं, वह नहीं करते हैं''।

इसलिए लोगों को कुछ भी सोचने दो, लेकिन लोकेश्वर का पसंदीदा कर्मों और बातें करने पर भूमि पर ही मोक्ष पा सकते हैं। जिस दिन भगवान के कृपा से आपको गुरु मिला है, उनके बातों को जरूर पालन करना चाहिए। तभी उस मूर्खता को, दुखों को, और बंधनों को छोड़ देंगे।

असलियत में, बंधनों रहने पर ही दुख और भय होता है। बंधन को तोड़ने से दुख है और लोगों क्या सोचेंगे का भय रहता है। इन दोनों की वजह से ही बंधन आए हैं। जब तक बंधनों रहता है दुख नहीं जाता है, मूर्खतापन नहीं जाएगा। अगर इन दोनों को निकालना है तो गुरु का दिया हुआ साधना, स्वाध्याय करना चाहिए। साथ में आहार का नियमों को कठिनाई से पालन करना चाहिए। जब यह तीनों रहेंगे मानव उच्च स्थिति की ओर बढ़ता है, मोक्ष

स्थिति में रह पाएगा।

इसलिए कहते हैं कि, ''मूर्ख का जन्म लेना गलत नहीं है, अज्ञानी का जन्म लेना गलत नहीं है, लेकिन ज्ञानी बनाकर मरना चाहिए''।

जब आपके जीवन में गुरु आया है, अज्ञानी से ज्ञानी बनना चाहिए, मूर्खता से मुमुक्षत्व, की ओर जाने का प्रयत्न करना चाहिए। नहीं तो यह साधना आपको निरुपयोगी है। इसलिए इतना साधना किया है या नहीं का नहीं देखना है। लेकिन साधना कर कर क्या-क्या छोड़ना है, क्या-क्या छोड़ा है, विषय विरक्ति हुआ है या नहीं? बाहर की ओर छोड़ा है या नहीं? इन सारे विषयों को देखना है।

जब आप विषय आसक्ति छोड़ेंगे तभी आप आध्यात्मिकता में उच्च स्थिति पहुंचेंगे। बाहर की ओर से अंदर मोड़कर, आप आत्मा है को जानकर, आत्मा की तरह भूमि पर जीना ही मोक्ष स्थिति है। जब मानस कहता है कि मैं जीव हूँ, शरीर हूँ समझेगी, तब सब लोगों से पाने को सोचते हैं। वहीं अगर आप अपने को आत्मा समझेंगे, सबको देने का सोच रखते हैं। पाने में दुख है, और देने में आनंद है का विषय जानना चाहिए।

इस आनंद को खुद अनुभव करना चाहिए, तभी मूर्खता से मुमुक्षत्व की ओर जाने से ही, मानव का जन्म सार्थक बनेगा। इस के लिए अच्छा साधना रहना चाहिए। साधना के लिए अपना मनस और शरीर को सही रखना चाहिए। इन दोनों आहार के द्वारा आता है, इसलिए हल्का खाना और सही खाना है। तब सही व्यवहार होगा। तब इन दोनों स्थितियों पार कर कर, आत्मा की स्थिति में आने से आत्मा स्थिति में रहेंगे। आत्मा का बढ़ावा ही मोक्ष स्थिति कहते हैं।

अहंकार को कैसे निकालना चाहिए ?

सभी लोग आत्मा को ढूंढते रहने चाहिए, मतलब आत्मा का दर्शन के लिए, मतलब उस आत्मा अनुभूति पाने के लिए, प्रयत्न करना चाहिए। तब इतना सारा प्रयत्न करने पर भी क्यों हासिल नहीं कर पा रहे हैं ? क्योंकि आपके अंदर कमियां और गलतफहमियां को नहीं छोड़े हैं।

जब तक उन कमियों को ठीक नहीं करते हैं, तब तक आत्मा का अनुभूति नहीं होगी। लेकिन जब सज्जन सांगत्य में भाग लेंगे तभी मालूम पड़ेगा कि कहां गलतियां कर रहे हैं ? तब उन गलतियों को ठीक कर कर आगे बढ़ेंगे।

आप समझते हैं कि आपको बहुत विषयों का जानकारी है। लेकिन सब कुछ मालूम नहीं है, अगर सब कुछ मालूम है तब इस भूमि पर क्यों रहना है ? इसलिए सब कुछ जाना है को समझना ही अहंकार है। और सीखने के लिए बहुत कुछ है समझेंगे तो विनयशील कहते हैं। जितना ज्यादा विनयशील रहेंगे उतना ज्यादा ज्ञान बढ़ेगा। जब अहंकार रहता है तब समझना है कि सीखने को कुछ नहीं है। जब अहंकार नहीं रहता है तब समझेंगे कि और कुछ सीखने को है।

इसलिए अहंकार क्या है ? वह कैसे बनता है ? इस अहंकार को कैसे निकालना है ? इन विषयों को अभी जानते हैं। आप जो प्रापंचिक जीवन में है, जब आध्यात्मिक जीवन में आए हैं, एक-एक सीढ़ी चढ़ना चाहिए। प्रापंचिक जीवन में धर्म और अधर्म, सुख और दुख, जैसे द्वैत विषयों रहते हैं। यह सभी मनस का, और बुद्धि का, लक्षणों है। इनसे आत्मा को कोई संबंध नहीं है।

आत्मा को कर्तृत्व और भोक्तृत्व नहीं होते हैं। मैं कर रहा हूँ कर्तृत्व भावना है। मतलब यह काम मैं कर रहा हूँ, मेरे वजह से हो रहा है। यह कर्तृत्व भावना है। कष्ट और सुख मै अनुभव कर रहा हूँ, यह भोक्तृत्व भावना है।

उदाहरण के लिए आपने एक काम किया है, और आपको सब लोग प्रशंसा किए हैं कि तुमने अच्छा किया है। ऐसे कहने पर संतोष मिलता है, उस संतोष मानस अनुभव करता रहता है। इसलिए बाहर का प्रपंच में करने वाला सारे कर्मों को मैं कर रहा हूँ, मैं करता हूँ, समझ रहा है, मतलब अपना बुद्धि में अहंकार है। और मुझे उस से दुख हो रहा है, इससे दुख हो रहा है, इन लोगों के वजह से आया है, मेरे पति मुझे कष्ट दे रहा है, मेरे घर वाले कष्ट दे रहे हैं, बार–बार सोचना ही भोक्तृत्व भावना है।

मैं कर रहा हूँ का भाव बुद्धि का है। मैं अनुभव कर रहा हूँ का भाव मानस का है। "मै कर रहा हूँ का भाव कर्त्तृत्व है और अनुभव कर रहा हूँ का भाव भोक्तृत्व है"। यह दोनों बुद्धि और मानस का है। इन दोनों का मिलावट ही अहंकार है।

जब यह अहंकार हद पार करती है, तब जब आप समझेंगे कि आप खुद बहुत सारे काम कर रहे हैं, तब बुद्धि में अहंकार बढ़ जाता है। इसी प्रकार कुछ विषयों में संतोष होते हैं, और कुछ विषयों में दुख होते हैं। प्रशंसा करने पर संतोष होता है, विमर्श करने पर दुख रहता है।

और इन दोनों को अनुभव करते हुए समझते हो कि उनके वजह हुआ है, और इनके वजह हुआ है, अगत ऐसी ही बुद्धि और मानस के साथ रहते हो, जीवन मे कुछ समय दुख और कुछ समय संतोष रहता है। कुछ लोग पर अनुराग, कुछ लोग पर द्वेष, यह सभी अहंकार संबंधित है। इन सब का अनुभव कर कर कर्मों को इकट्ठा कर रहे हैं।

इसलिए पत्री जी ने कई बार कहा है। "नो कमेंट और नो जजमेंट"। सिर्फ इसको एक कहावत समझ रहे हैं, लेकिन गहराई में नहीं सोच रहे हैं। पत्री जी ने ऐसे क्यों बताया? आप कहते हैं कि उनके वजह से मुझे दुख हुआ है, मतलब आपका मानस उस दुख के साथ रहता है, आप जजमेंट कर कर मनस को और बल दे रहे हो।

वह लोग ऐसे हैं, वैसे लोग हैं, करके जजमेंट दे रहे हो मतलब आपकी बुद्धि में वह सही है, गलत है का जजमेंट दे रहे हो। इसलिए बुद्धि में

कर्तृत्व भाव है। अगर उस काम का जिम्मेदार वह लोग है, तब आप क्यों जजमेंट दे रहे हो ? जरूरत नहीं है, लेकिन रुकते नहीं है। ऐसे अहंकार को बढ़ाते हैं। जब आप दूसरों को विमर्श करते हो, दूसरों के बारे में निर्णय ले रहे हो, आपके अंदर अहंकार बढ़ता रहता है।

इसलिए कर्तृत्व और भोक्तृत्व रहने पर अहंकार को बढ़ाते रहते हैं। अहंकार कैसे बनता है, बताने के लिए अष्टावक्र ने क्या कहा है ? कि कर्तृत्व और भोक्तृत्व के वजह से अहंकार बनता है। उनको छोड़ने से ही अहंकार निकल जाता है।

इस कर्तृत्व और भोक्तृत्व को दोनों को छोड़कर आपको साक्षी रहना है। क्योंकि आत्मा का साक्षी तत्व है, कहने को नहीं है और अनुभव भी नहीं है। इसलिए आत्मा स्थिति में रहना वाला व्यक्ति साक्षी बनकर देखते है।

श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि एक साधक को चार विषयों रहना है, श्रवनम, मननम, निधि ध्यास, और साक्षात्कार करना। मतलब गुरु को श्रद्धा से सुनना चाहिए, श्रवन करना चाहिए, और सुना हुआ विषय को बार–बार पढ़ना चाहिए, यही मनन करना है। एक बार सुनकर छोड़ने से वह अधम श्रवन हुआ है, बार–बार मनन करने से आपके अंदर स्थित होकर निधि ध्यास बन जाता है। मतलब आप आत्मा है का ध्यास, आप में निधि जैसे बन जाता है। जैसे सोने का खदानों में सोना ज्यादा मिलता है, इसी तरह लोहे के खदानों में लोहा ज्यादा मिलता हैं, आजकल दिखते हैं कि कोयला के खदानों में जितना खुदाई करते हैं उतना ज्यादा कोयला मिल रहा है।

तब ऐसे खदानों में सब कुछ ज्यादा ही मिलता है। मतलब उसी को निधि कहते हैं। इसी प्रकार हमारा हृदय का खदानों में आत्मा का निधि रखा है। मतलब जब गुरु कहता है कि आप आत्मा है, तब बार–बार आप मनन करने से, मैं आत्मा हूँ का भाव हम में स्थित हो जाता है। इसलिए निधि ध्यास कहते हैं। मतलब आपको उस भाव स्थिर रहता है। तब सब कुछ साक्षी बनकर देखते हो, लेकिन किसी पर कमेंट या जजमेंट नहीं करेगा। ऐसे श्री शंकराचार्य जी ने इन चारों विषयों के बारे में बताया है।

बुद्धि और मनस को ''मैं'' समझ रहे हो। अगर यह कर्तृत्व, भोक्तृत्व, दोनों मेरे है को समझेंगे, तो बुद्धि में अहंकार, मानस में अहंकार बढ़कर, अहंकार का हद पार कर, गर्व का स्थाई तक पहुंच जाता है।

जब सब लोग प्रशंसा करते हैं, या कुछ करते समय, आपका अहंकार ज्यादा होने से, मैं सब कुछ ठीक कर रहा हूँ करके गर्व महसूस करते हो। इसलिए कुछ भी बातें नहीं कर कर, विमर्श नहीं कर कर, मानस से लीन नहीं रहकर, बुद्धि में लीन नहीं होकर, तब इस अहंकार को कम कर सकते हैं।

मतलब क्या करना है ? जो होगा सो होगा करके साक्षी भाव से देखना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में आने के बाद, ध्यान साधना करते वक्त, आत्मा से ही आपको संकेत मिलते हैं। उस समय आपको कुछ कार्यों करने को लगता है करके, आप करते हैं। तब ऐसे आप परमात्मा के लिए काम करने से, मतलब ध्यान बताना, या क्लास करवाना, ऐसे कुछ करना, वह परमात्मा का आदेश है। तब उसका फल भी उन्हीं का है को नहीं समझ कर, मैं कर रहा हूँ समझेंगे तो आप में अहंकार है।

मतलब आपका बुद्धि अहंकार से भरा है। और जब क्लास सफल होता है, आप कहते हैं कि मुझे बहुत खुशी है। मतलब उसका आनंद मानस अनुभव किया है। इसलिए बुद्धि में अहंकार, और मानस में अहंकार, इन दोनों अहंकारों से आप नीचे जा रहे हैं। आत्मा के वजह से कर रहा हूँ का भाव नहीं है।

जो प्रापंचिक जीवन में है, हो सकता है उसको मालूम नहीं। प्रापंचिक जीवन में कुछ भी करने पर, मैं बड़ा घर बनाया हूँ, मैं बड़ी गाड़ी खरीदा हूँ, हर चीज इस शरीर को संबंध रख कर बात करते हैं। मेरे से यह हुआ, मैंने कष्ट किया है, मैंने वह किया है, ऐसे सब कुछ बातें, प्रापंचिक जीवन में सहज लगता है।

लेकिन आध्यात्मिक जीवन में, आपको करने का भाव, उसका संकल्प, आत्मा से ही आपको आता है। लेकिन जब आप इस जागरूकता खो

जाते हैं, मानस और बुद्धि को बढ़ावा देकर, कर्तृत्व और भोक्तृत्व में जी रहे हो, मतलब, आपको मैं शरीर हूँ का भाव अभी नहीं निकला है का विषय, परमात्मा को और गुरु को, समझ आता है। इन दोनों को छोड़ना चाहिए, मैं आत्मा हूँ, इस भूमि पर यह होना चाहिए, यह परमात्मा का संदेश है, परमात्मा का संकल्प है, वह मुझसे करवा रहे हैं का भाव में रहना चाहिए, और जानना चाहिए।

आध्यात्मिकता का हर एक काम आपसे करवा रहा है लेकिन आप कुछ भी नहीं कर रहे हैं। अगर मैं कर रहा हूँ, मुझे संतोष हुई है, दुख हुई, करके कर्तृत्व और भोक्तृत्व अपने ऊपर रखेंगे तो मानस और बुद्धि का अहंकार बढ़ती है। वही बात, अष्टावक्र जी ने जनक महाराज को यह बोध करते हुए कहा कि सबसे पहले संदेश में, इस बंधन कैसे हुआ है ? बता कर कहा कि उस बंधन मानस और बुद्धि का है। इसलिए इस मानस और बुद्धि का अहंकार कम करना चाहिए। मतलब मैं कर रहा हूँ का भावना छोड़कर, मुझे दुख हुआ, मुझे संतोष हुआ, का भावना छोड़ दीजिए। तब मानस और बुद्धि, अहंकार से लीन नहीं होगा।

क्योंकि कर्तृत्व और भोक्तृत्व अपने ऊपर ले लिया है, तभी जीव रहकर भूमि पर व्यवहार कर रहे हो। उससे अहंकार को पाल रहे हो। अहम मतलब जब आप अपने को शरीर समझेंगे, तभी मैं कर रहा हूँ का भावना आता है। अगर बाहर वालों को बताने का स्थिति आता है तब द्वंद स्थिति में रहने को कहा, लेकिन अंदर में तुरंत जानना चाहिए कि यह सभी मेरे धर्म नहीं है, मतलब आत्मा का धर्म नहीं है।

कर्तृत्व और भोक्तृत्व, या अहंकार ममाकर, या राग द्वेश या कुछ और, आत्मा का धर्म नहीं है। क्योंकि आत्मा सब कुछ साक्षी रहकर देखतीं है। मैं भी अपना शरीर को इस्तेमाल कर रहा हूँ, लेकिन आत्म शक्ति से काम कर रहा हूँ। इसलिए उनके फल कुछ भी मेरा नहीं है।

मतलब जब एक काम कर रहे हो, जब कोई प्रशंसा करता है, मेरे वजह हुआ करके सोचते हो, संतोष हो जाते हो, जब कोई गालियां देता है,

मैं कितना कष्ट किया हूँ, फिर भी लोग मुझे डांट रहे हैं, करके दुखित रहते हो, मतलब दोनों खुद ही स्वीकार कर रहे हो, इसलिए आप देह स्थिति में है। जब देह स्थिति में रहते हैं तब सब कुछ रहता है। मतलब अहंकार ममकार का, राग द्वेष, धर्म अधर्म, द्वंदों रहेंगे।

आपको द्वंदातीत स्थिति पहुंचना है। मतलब जबकि आप कर रहे हो, उनके फल को स्वीकृत नहीं करना है मतलब उस कर्तृत्व और भोक्तृत्व, नहीं रहना चाहिए। ऐसे करना अच्छा है बुद्धि से निर्णय किया है, लेकिन वह मैं नहीं, परमात्मा का आज्ञा से मैं कर रहा हूँ, यह दोनों करने का अधिकार मुझे है, लेकिन उसका फल स्वीकृत करने का अधिकार मुझे नहीं है, का भाव में जब रहते हो तब आप आत्मा स्थिति में है।

आप शरीर को, मानस को, बुद्धि को, प्रमुखता नहीं देने वाला स्थिति साधना से ही आता है। इतना जानकार भी अगर ऐसी स्थिति में नहीं रह पा रहे हैं, मतलब, इतने सारे जन्मों से मनो स्थिति, बुद्धि स्थिति, शारीरिक स्थिति में जिए हैं। कई सारे जन्मों में शरीर जैसा जिया है,। इसलिए उन वासनाएं उतना जल्दी नहीं जाएंगे।

ऐसे ही, मैं शरीर हूँ का भावना से आने वाला आप, आध्यात्मिक जीवन में आते ही गुरु का पहला वाक्य सुनते है, ''आप शरीर नहीं है, आप आत्मा है''। उसी दिन से आप जो भी काम करते हैं, मैं कर रहा हूँ को छोड़कर मुझसे करवा रहा है का भावना रहना चाहिए। ऐसे करने से शरीर, मानस और बुद्धि, को काम में लगाकर उसका फल परमात्मा को छोड़ देते हैं।

बाहर से, कुछ भी काम करने से यह शरीर ही दिखता है। उसने किया था, इसने किया करके बताते हैं, लेकिन आप को ठीक है, कहते हुए अंतर में आपको आत्मा पर कृतज्ञनता भाव रहना चाहिए। यह काम करने के लिए मै एक उपकरण ही हूँ। लेकिन अंदर रहने वाला आत्मा ही सब कुछ करवा रहा है का भावना रहना चाहिए।

जो कुछ काम करते हो, उनका आज्ञा, आदेश समझना चाहिए। जब आप आत्मा की स्थिति में रहते हो, जब आपका हर एक काम विश्व के लिए

ही है, आपको अनंत संदेशों मिलते हैं। आपके अंदर से जो भी संदेश आया है, समझो कि वह परमात्मा का आदेश है। जब आप आत्मा को पहचानते हो, आत्मा जैसे जिएंगे तब आपको आत्म दर्शन होगा। आत्मा अनुभूति होगा। परमात्मा से संदेशों पहुंचते हैं। वह सभी विश्व को दे सकना चाहिए।

बिना आत्म शक्ति इस शरीर एक इंच भी हिल नहीं सकता है। इस शरीर को शक्ति देने वाला आत्मा ही है को जानते हुए, उस आत्म शक्ति को बढ़ाने का निरंतर ध्यान साधना करने से, एक न एक दिन आत्मा का अनुभूति मिलेगा। तब मैं कर रहा हूँ, मैं अनुभव कर रहा हूँ, का कर्तृत्व और भोक्तृत्व से होने वाला अहंकार कम होता रहता है।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

मानव जन्म का महत्व।

मानव लोग परिणाम क्रम में कई सारे जन्म लेते हैं। कीड़े से लेकर, पक्षियों, चार पैरों वाला जानवरों का जन्म लेकर, आखिर में मानव जन्म लेते हैं। बड़ों ने कहा है की सबसे महान जन्म मानव का है। तब यह क्यों महान है ? इसके बारे में अभी जानते हैं।

खनिजों में, पत्थरों में, चैतन्य रहता है। लेकिन व्यक्तीकरण करने का शक्ति उनमें नहीं है। ऐसे ही पेड़ों में भी चैतन्य है, लेकिन थोड़ा सा व्यक्तीकरण करते हैं। देखिए एक पत्थर दूसरा पत्थर को जन्म नहीं देता है, लेकिन पेड़ों तो बीजों के रूप में पुनर उत्पत्ति करते हैं। लेकिन अपना अनुभव को कोई पेड़ व्यक्त नहीं कर पाता है। मनुष्य, अपने को बच्चा जन्म हुआ है को बता सकता है। लेकिन कोई भी पेड़ मैंने एक बीज दिया हूं, उस बीच से ही पेड़ों आते हैं का बताने का शक्ति उनमें नहीं है।

और जानवरों को अनुभवों होते हैं, और चलते हैं, पुनर उत्पत्ति करते हैं। मतलब एक गाय को एक बच्ची पैदा हुई है, तब उसको प्रेम से पास लेकर जीभ से चाटता है। लेकिन वह बड़े होते होते, क्योंकि बुद्धि नहीं है, उनका अनुभव कैसे रहते हैं का ग्राहक शक्ति नहीं है। जानवरों में अनुभव रहते हैं, मतलब ममता रहता है, बच्चा पास आने से चाटती है, पास लेती है, दूध देती है, लेकिन व्यक्त करने का बुद्धि जानवरों में नहीं है।

मतलब यहां पर पत्थरों में व्यक्त करने का शक्ति नहीं है, एक पेड़ दूसरा पेड़ को बीज रूप में जन्म देता है, लेकिन उसको बताने का मानस और बुद्धि पेड़ों में नहीं है। जानवरों अनुभव पाते हैं लेकिन ग्राहक शक्ति और बुद्धि नहीं होने से, ग्रहण नहीं कर सकते हैं।

तब इन तीनों में से सिर्फ मानव को बुद्धि है और अपना एक–एक अनुभव को व्यक्त कर पा रहा है, अपना अनुभूतों को व्यक्त कर रहा है। इस बुद्धि की वजह से अपना अनुभव और अनुभूतों को व्यक्त कर पा रहा है।

मतलब इस सृष्टि में किसी और जीव को नहीं दिया गया बुद्धि शक्ति, प्रकृति में सिर्फ मानव को दिया गया है।

इसलिए इस सृष्टि में 84 लाख जीवों में मानव ही महान है। मानव अपना अनुभवों को बता सकता है, अनुभूतों को बता सकता है, अपना असली स्वरूप को जान सकता है, और इस बुद्धि को उपयोग करके महान बन सकता है। तब असली स्वरूप क्या है ? कि वह आत्मा है, वह परमात्मा का अंश है को जान सकता है, यह मानव जन्म। लेकिन इस बुद्धि को सही इस्तेमाल करने वाला ही महात्मा बन सकते हैं।

उस बुद्धि नाश कर कर, दुरुपयोग कर कर, दानव जैसे निकृष्ट जीव बन रहा है। इसीलिए कोई भी गलती करने पर हम उसको क्या बुद्धि नहीं है ? करके डांटते हैं और बड़े लोगों को, क्या बुद्धि, ज्ञान नहीं है ? करके डांटते हैं। अगर वही जब जानवरों खेतों में जाकर फसल को खाते हैं, तब उन्हें बुद्धि और ज्ञान नहीं है करके नहीं डांटते हैं, और उनको मार कर भगा देते हैं।

तब मानव को क्यों ऐसे डांट पड़ता है जब कोई गलती करते हैं ? मतलब उस मानव जन्म लेने के बाद बुद्धि को उपयोग कर कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, वह कौन है, वही परमात्मा है को जानकर, देव बनने का महान शक्ति 'बुद्धि' है। तब ऐसी बुद्धि को उपयोग नहीं कर कर, और निकृष्ट जीवन जी रहे हो। छोटे से गलतियों को क्या बुद्धि नहीं है ? करके डांटते हैं, अगर वही बड़े गलतियां करेंगे तो क्या बुद्धि, ज्ञान नहीं है ? करके डांटते हैं।

इन मानव हमें कई प्रकार के दिखते हैं।

(1) जानवर स्वभाव मानव, (2) मानव स्वभाव मानव, (3) दैव स्वाभाव रहने वाला मानव। इनके बारे में अभी जानते हैं।

(1) जानवर स्वभाव मानव :-

यह लोग तमोगुण में रहते हैं। तभी जानवर जन्म से मानव जन्म को आने वाले है। यह लोग अपना आनंद के लिए दूसरों पर हिंसा करते हैं। इनमें तमोगुण ज्यादातर रहने से शारीरिक स्थिति में रहते हैं, इनको इच्छाएं ज्यादा

होते हैं। अगर आप देखेंगे तो शारीरिक स्थिति में, मानसिक स्थिति में रहने वालों को ज्यादा इच्छाएं रहते हैं। यह लोग हर वक्त खाना, पीना, सोना और मैथुन में ही रहते हैं। मतलब शारीरिक सुखों चाहते रहते हैं, ऐसे ही जीते हैं।

उसी के लिए अपना जीवन बिताते हैं लेकिन बुद्धि को उपयोग नहीं करते हैं। देखिए अगर कोई भी हिंसा कर कर अपना इच्छाओं को पा रहे हैं मतलब वह बुद्धि उपयोग नहीं कर रहे हैं। दूसरी व्यक्ति का बाधा नहीं समझते हैं। मतलब बहुत ही निकृष्ट जन्म है। जैसे गाय या बैल को अगर हरी घास नहीं मिलती है, वह दूसरों को खेतों में जाकर भी फसल खा लेते हैं। दूसरों का खेत को नष्ट हो रहा है का सोच ही नहीं रहता है।

ऐसे जानवर की तरह मानव लोग दूसरों पर हिंसा कर कर भी, और दुख देकर भी, अपना सुख संतोष को पा लेते हैं। आजकल बाजू वाले के बारे में नहीं सोचते हैं। जो जैसे चाहे व्यवहार कर रहे हैं। दूसरे लोगों को दुख या कष्ट होगा को नहीं सोचते हैं। अपने बातों से और कर्मों से हिंसा कर रहे हैं। इन्हीं को जानवर स्वभाव मानव कहते हैं।

ऐसे लोगों बहुत सारे दिखते हैं। यह लोग पूरा जीवन अपना शारीरिक और मानसिक सुखों को ही प्रमुखता देते हैं।

(2) मानव स्वभाव मानव :-

यह लोग रजोगुण में रहते हैं। रजोगुण में रहने वाले लोग कर्मों ज्यादा करते हैं। कर्म को पाप मत समझना। वह लोग कभी खाली नहीं रहते हैं, वह कुछ ना कुछ काम करते रहते हैं। आज के स्थिति से उच्च स्थिति पहुंचना चाहते हैं। रजोगुण मतलब वह निकृष्ट जन्म समझते हैं। अगर रावनासुर को देखते हैं, वह कोई एक इच्छा से नाश हुआ है, देव नहीं बन पाया, लेकिन साधना में वह शक्तिमान है, अष्ट सिद्धियां को वश किया है।

इसी प्रकार मानव में बहुत लोग सबसे महान बनने का निरंतर श्रम करते रहते हैं। उनको धर्म मालूम है, शास्त्रों पर विश्वास है, अच्छाई पर

विश्वास है, भगवान पर विश्वास है। दूसरे लोगों को सहाय भी करते हैं। पुण्य के लिए कर सकते हैं, लेकिन दान धर्म भी ज्यादा करते हैं।

अर्थात स्वार्थ से रहने वाले तमोगुण लक्षण है तो, दूसरों को कष्ट नहीं देकर खुद कष्ट ना उठाकर जो अपने पास है उसी में से दूसरों को सहाय करने वाले ज्यादा लोग हैं। ऐसे रजोगुण में रहने वाले, कर्मों ज्यादा करते हैं।

तमोगुण वाले कर्मों करने में आलसी होते हैं, और रजोगुण वाले कर्मों करते हैं। जो पैसे वाले होते हैं, वह निरंतर कुछ व्यापार, या काम कुछ करते ही रहते हैं। लेकिन आलसी रहकर सोते नहीं रहते हैं। वैसे ही एक काम शुरू करने के बाद जब तक वह खत्म ना करें, तब तक वह नींद नहीं लेते हैं। यह शास्त्रों को और गुरुओं को गौरव करते हैं। और धर्म के बारे में सीखते रहते हैं। दान, धर्म करते हैं। जो कुछ करते हैं वह कष्ट नहीं समझते हैं, लेकिन इष्ट से करते हैं। पुण्य केलिए करते हैं, लेकिन इष्ट से करते हैं।

(3) देवत्व में रहने वाले मानव :-

यह लोग सात्विक गुण में रहने वाले हैं। ऐसे लोग हर समय लोगों को देव जैसे समझकर, कुछ सहाय करते रहते हैं। जबकि वह कष्टों में होता, दूसरों को भला करते हैं। शास्त्रों को अध्ययन करते हैं। धर्म को जानते हैं। गुरुओं को गौरव करते हैं। ऐसे लोगों को ही सद्गुरु मिलते हैं। सद्गुरु पाने तक वह संतुष्ट नहीं रहते है, क्योंकि उनका अन्वेषण कुछ ज्यादा ही रहता है।

क्योंकि वह सत्व गुण में आ चुके हैं, तभी सत्य को जानना चाहते हैं, सत्य पर आसक्ती ज्यादा रहती है। इनको जितना भी पूजा करें, व्रत रखें या, यज्ञ, यागों कर लें, उनको और कुछ जानने का तपन रहता है। यह तपन को ही तपस्या बनाते हैं। इनका तप को देखकर ही परमात्मा एक सद्गुरु से उनको मिलवाता है। उस सद्गुरु का बोध सुनकर, उनके मानस शांत हो जाता है। जैसे राघव राव जी ने बचपन में परमात्मा के बारे में सुना है, तब से उनमें उस परमात्मा का अन्वेषण चल रहा। जबकि वह तिरुपति बालाजी, जो अपना इष्ट देव है, को जाते थे या मंदिर बनवाया है, उसके मन में परमात्मा का अन्वेषण

चलता रहता था। पहले पैसे कमाने से प्रपंच में गौरव ज्यादा मिलेगी और दान, धर्म कर सकते हैं का सोच रहता था।

दान करने से भगवान को प्रशंसा करेगा करके, ज्यादा दान धर्म करते थे। लोगों को उपयोगी होने वाले इंस्टि्टट्यूट या मुफ्त होमियो अस्पताल जैसे कार्यक्रम करते थे। जितना भी ऐसी सेवाएं करें, उनको अंदर से संतुष्ट नहीं रहा। और कुछ चाहता था। अंत में उन्हें सत्य बोध करने वाला गुरु को चाहा और बहुत सारे आश्रम को गए थे, गुरुओं को ढूंढने। कोई पसंद नहीं आया है। क्योंकि जो भी वह बताते थे उनको संतुष्ट नहीं हुआ।

यहां देखिए कि जब आप तैयार हैं, तब आपको सारे गुरुओं पसंद नहीं आते हैं। बाधा गुरुओं या बोध गुरुओं अच्छे नहीं लगते हैं, केवल सद्गुरुओं ही अच्छे लगते हैं। मतलब और जन्मों ज्यादा करने वाले बोध गुरुओं होते हैं। तब सदगुरु क्या करते हैं ? जन्मों कम करने के लिए कैसे कर्मों करना सिखाते हैं। जब तक पत्री जी का परिचय नहीं हुआ राघव राव जी सिर्फ पुण्य कर्मों करते थे।

उनका परिचय के बाद जब से पत्री जी ने बोध किया है कि पुण्य कर्मों करने से दोबारा जन्म मिलता है, भोग मिलता है। लेकिन आत्म कर्मों करने से जन्म रहित स्थिति, मोक्ष स्थिति पाते हैं। तब से ध्यान साधना, ज्ञान पाना, उस ज्ञान सबको बांटना हर गांव जाकर, और यह ज्ञान वह लोग ना भूले किताबों को छपवाना, ऐसे किताबों को लोगों तक पहुंचाने का कोशिश कर रहे हैं। अभी उनको अपना जीवन में संतुष्ट मिला है।

मतलब दैवत्व वाले मानव क्या करते हैं ? खुद का योग क्षेम से ज्यादा लोगों का योग क्षेम मुख्य है, को देखते हैं। ऐसे लोग हजारों या करोड़ों में एक होगा। अगर सब लोग ऐसे होंगे तब यह कलियुग नहीं, कृत युग होगा।

तब इस प्रकार देव गुण मानवों अपने आजू–बाजू प्रपंच को देव की ओर ले जाने का प्रयत्न करते रहते हैं। उस तपन रहने वाले लोगों को सद्गुरु मिलता है। उनके निर्देशानुसार यह लोग आगे चलते हैं। तब तक उनको

संतुष्ट और आनंद नहीं मिलता है।

ऐसे लोग अपना शरीर और मनस को लापरवाह कर कर घूमते हैं। बहुत लोग मुझे और राघव राव जी से पूछते हैं कि आपको इतना बड़ा उम्र है, आप लोग कैसे घूमते रहते हैं ? जब आप अपना शरीर और मनस को प्रमुखता नहीं देकर, आत्मा को प्रमुखता देते हो, दूसरों का आत्मा उद्धारण के लिए तपन रहते हो, इस शरीर और मानस को कष्ट नहीं होने को और आपका योग क्षेम, प्रकृति द्वारा, परमात्मा ठीक रखेगा।

आपको मालूम है राघव राज जी पिछले दिनों में गलती से पानी समझकर तेज़ाब पी लिया। अब ठीक होकर दोबारा क्लासें बता रहे हैं और कई सारे जगहों जाकर बता रहे हैं। तब देव गुण मानवों में इस तरह का प्रवर्तन रहता है। कर्मों रहने पर यह होता रहता है। किसी का जीवन में जब अपने लिए जीते हैं, तब कर्मों लंबी समय रहेंगे। जब दूसरों के लिए जीते हैं तब यह कर्म का समय जल्दी कम होंगे। मतलब कुछ ही समय रहेगा। लेकिन कर्म नहीं जाएगा।

तब आप खनिज और शिला बनकर आने से, आप कुछ भी हासिल नहीं करेंगे। वृक्ष बनकर थोड़ा लोगों को उपयोगी है, जानवर बनकर आने से थोड़ा और उपयोग है, लेकिन दैवत्व के पास को नहीं जाएंगे। मानव को बुद्धि है तभी उस बुद्धि को उपयोग कर कर, गुरु द्वारा, शास्त्रों द्वारा, सब कुछ अध्ययन कर कर, अपना स्वरूप को जान सकता है। अगर उस बुद्धि को नाश करेंगे तो जीव ही रहेगा, कभी देव नहीं बन सकता है। इसीलिए मानव जन्म श्रेष्ठ कहते हैं।

प्रकृति बुद्धि का वरदान सिर्फ मानवों को ही दिया है। किसी और जीव को नहीं दिया है। इसीलिए मानव से, यह सभी कम शक्ति वाले ही हैं। कम शक्ति वाले भी आत्म स्वरूप ही है, लेकिन उनको बुद्धि ना होने से कुछ व्यक्त नहीं कर पाते हैं। कुछ अनुभूतों नहीं पा सकते हैं। जैसे वृक्षों को कुछ अनुभूतियां मालूम नहीं है, जानवरों को अनुभूतियां होते हैं, लेकिन व्यक्त नहीं

कर पाते हैं। मानवों को अनुभूतियां ग्रहण करने के लिए मानस है, व्यक्त करने के लिए बुद्धि है। इसीलिए अपना साधना करके मानस से ग्रहण कर कर, बुद्धि से व्यक्त करते हुए, एक मानव महात्मा जैसे, और माधव बन सकता है। पहले अपना साधना द्वारा असली स्वरूप जानने के लिए, मैं आत्मा हूं को जानना चाहिए।

मानवों का अनुभूतियां, अनुभवों, पहले ही बुद्धि में निक्षिप्त होता है। बुद्धि उपयोग करने वाला मानव, महात्मा बन सकता है। बुद्धि को नष्ट कर कर जानवर जैसे सबको कष्ट नहीं देना है। इसलिए कभी भी गलत काम नहीं करना है। बुद्धि नहीं है क्या? करके किसी से सुनना नहीं चाहिए।

जो बुद्धि उपयोग करता है, वह सही प्रवर्तन करता है। और जो सही उपयोग नहीं करता है उनका प्रवर्तन सही नहीं रहता है। इसीलिए ही मानव इस सृष्टि में सबसे महान जीव है। सिर्फ मानव जन्म में ही देव को जान सकते हैं। इसलिए आप हर समय कुछ ना कुछ जानते रहना चाहिए।

आपसे बहुत लोगों पूछते होंगे! सब कुछ आत्म स्वरूप ही है ना! तब पत्थरों में भी देव है ना? तब उन पत्थरों को पूजा क्यों नहीं कर सकते हैं? करके पूछते हैं। कारण यही है कि पत्थरों में बहुत कम चैतन्य शक्ति है। सबसे ज्यादा चैतन्य शक्ति मानव में है। इसलिए पत्थरों में देखना नहीं, खुद के अंदर का देव को पूरी सृष्टि में है को जानना चाहिए। यह जानकर मानव अपने अंदर की शक्ति को बढ़ाना चाहिए, बल्कि अत्यंत अल्पिनीय चैतन्य शक्ति वाले पत्थरों से शक्ति देने को पूछने से, वह क्या शक्ति देंगे, जिसको अपने से कई गुना अधिक शक्तिमय है?

जब यह जानेंगे सब लोग भी ध्यान साधना करेंगे। क्योंकि साधना करने का शक्ति सिर्फ मानव को है। बुद्धि उपयोग करने से मालूम पड़ेगा। अगर बुद्धि को उपयोग नहीं करेंगे तब कहेंगे कि मुझसे नहीं होगा। एक मानव जो जान सकता है पूरा मानव जाति जान सकता है। जब यह समझेंगे तब जानेंगे कि सबको दैव बनने का अर्हत है। सृष्टि में 84 लाख जीवों में सिर्फ

मानव को ही यह अर्हत है को समझने से, हर कोई ध्यान में आ सकता है। देव बन सकता है और बनना भी चाहिए।

इतने सारे विषयों को नहीं जानने से आप आगे नहीं बढ़ेंगे। कुछ ना कुछ संदेह रहेंगे। इसलिए हर एक विषय को जानना चाहिए। बहुत लोग पूछते है कि, और कितने दिन सुनते रहेंगे? जिस दिन आत्म दर्शन होगा, मतलब आपको इस सृष्टि में सब कुछ जान लिए हैं, तब तक सुनते ही रहना है और जानते ही रहना चाहिए। ध्यान साधना करता ही रहना चाहिए। आपका अन्वेषण जारी रहना चाहिए।

शूद्रत्वं - विप्रत्वं - ब्राह्मणत्वं ।

आजकल पूरी दुनिया में जो जिस जाति में जन्म लेते हैं, उसी को अपना जाति बताते हैं। लेकिन श्री कृष्ण ने भागवत गीता में कहा है कि अपने-अपने गुणों के हिसाब से वर्णों को विभाजन किया है।

श्लो: चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम ॥ (भ.गी.4-13)

तात्पर्य : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र करके चार वर्णों को गुण कर्म विभागों के हिसाब से मुझसे सृष्टि हुआ है। इस प्रकार जबकि मैं सृष्टि करता हूँ, अविनाश रहने वाला मुझे ऐसे ही जानिए। मतलब चार वर्णों को अपने गुणों के हिसाब से मैं विभाजन किया है, उसने कहा है।

(1) जिसको ज्ञान है उसे ब्राह्मण कहा है।

(2) जिसको धैर्य है उसे क्षत्रिय कहा है।

(3) जिसको संतुष्टि है उसे वैश्य कहा है।

(4) और बाकी लोगों को शूद्रों कहा है।

आजकल वर्ण व्यवस्था चला गया और जाति व्यवस्था आया है। ब्राह्मण के घर में पैदा होने वाला ब्राह्मण है, वैसे ही क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति में। आप लोग भी आत्मज्ञान पाने तक वैसे ही सोचते होंगे।

लेकिन आत्मज्ञान पाने के बाद, भगवान के दृष्टि में जाति से ज्यादा गुणों को प्रामुखता है का विषय जानते हैं। भगवान कर्मों के और गुणों के हिसाब से विभाजन किया है। लेकिन दुनिया में वह जातियों में बांटकर एक दूसरों के प्रति विरुद्ध बन गए हैं।

लेकिन आजकल मानव के गुणों के हिसाब से, उनके लक्षणों के हिसाब से, तीन प्रकार के विभाजन किए हैं।

(1) शूद्रत्वम, (2) विप्रत्वं , (3) ब्राह्मणत्वं ।

(1) **शूद्रत्वमः**- यह लोग तमोगुण में रहते हैं। साफ सुथरा कम रहते हैं। अश्रद्धा ज्यादा रहता है। हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि जहां साफ सुथरा नहीं रहता है, वहां लक्ष्मी माता नहीं रहती है। और भागवत गीता में भी श्री कृष्ण ने कहा है।

श्लोः अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥(भ.गी.12-16)

तात्पर्यः- जिसका कोई इच्छाएं नहीं है, अंतर शुद्धि रहने वाला, विवेकी, किसी चीज पर आसक्ती नहीं रखता है, दुखित नहीं रहने वाला, समस्त कार्यों को त्याग करने वाला, मुझ पर, मतलब आत्मा पर भक्ति रहने वाला! मुझे इष्ट है।

मतलब किसी पर अपेक्षा नहीं रहने वाला, साफ सुथरा रहने वाला मुझे इष्ट है को कहा है। साफ मतलब शरीर को साफ रखना, नहा कर सुची रखना है और सुथरा मतलब, अपना अंदर को साफ रखना है। हर एक काम को साफ सुथरा के साथ करना चाहिए। अंदर का साफ रखना मतलब मानस को, बुद्धि को, चित्त को, कोई भी गलत सोच नहीं रख कर, ध्यान द्वारा साफ रखना चाहिए।

पुराने दिनों में जब किसी को खाना कोई खाना बनाता था कुछ भी काम करने से पहले स्नान कर कर, साफ सुथरा रहते थे। तब लोग रसोईघर में स्टोव के पास जाने से पहले स्नान करते थे। आजकल भी बहुत लोग ऐसे हैं। लेकिन आज के लोग खाना पकाने वाले अग्नि को आग समझते हैं। तब यह सुची, साफ सुथरा किस लिए? पुराने जमाने में जाने या अनजाने सभी में भगवान को देखते थे, और साफ सुथरा रहने को सोचते थे। रसोई घर में स्टोव को जलाने के बाद अग्नि देव समझकर नमन करते थे, लेकिन आजकल बुद्धि ज्यादा हो गया है और पूर्ण ज्ञान नहीं रहकर, यह जरूरत नहीं है को समझ कर, अपने हिसाब से नौटंकी करते हैं। साफ सुथरा नहीं रहकर, और

भाव तो असुची ही रहता है, यह सभी लोग तमोगुण वाले हैं। बहुत लोग आजकल खाना बनाकर स्नान करते हैं।

लेकिन आप स्नान कर कर बनाया हुआ खाना का रुचि , और बिना स्नान कर कर बनाया हुआ खाना का रुचि में बहुत फर्क रहता है। तब ऐसे सुची और सफाई नहीं रहने वालों को भगवान इष्ट नहीं होता है। लेकिन इस तमोगुण प्रधान वाले या शूद्रत्वं के साथ रहने वाले, यह साफ सुथरा नहीं रहते हैं, और इन लोगों को इच्छाएं भी ज्यादा रहते हैं।

क्योंकि इन लोगों को अंतर्दृष्टि, आत्मा दृष्टि नहीं है, तो बाहर के प्रपंच को देखकर ऐसे रहना अच्छा लगने से, ज्यादा इच्छाओं के साथ रहते हैं। वह शारीरिक इच्छाएं और मानसिक इच्छाएं भी होते हैं जिसको इच्छाएं ज्यादा होते हैं, वह भगवान को उतना दूर रहता है। देखेंगे तो यह सारे प्रापंचिक इच्छाएं हैं, मतलब यह लोग जरूर तमोगुण वाले हैं।

कुछ लोग अपनी इच्छाएं को पाने के लिए दूसरों पर हिंसा करते हैं, कष्ट देते हैं, नीच काम भी करते हैं। दूसरों को मार कर भी अपना इच्छाओं को पूरा करने को सोचते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया में बहुत देखते हैं। कोई अगर बात नहीं सुना तो, हिंसा करना या अपने रास्ते में आने वालों को मार देना, ऐसे बहुत कुछ देख सकते हैं।

तब ऐसे लोगों को सत्य और धर्म मालूम नहीं है, दान मालूम नहीं है, स्वार्थ से जीने वालों को त्याग बुद्धि भी नहीं रहता है। इन लक्षणों रहने वालों को शूद्रत्वं कहते हैं। मतलब जबकि वह ब्राह्मण जाति में पैदा हुआ है, या उच्च जाति में पैदा हुए हैं, क्योंकि वह हिंसा प्रवृत्ति है उसको शूद्रत्वं ही कहलाते हैं, महात्माओं ने कहा है।

यह सारे नियमों इसलिए बताए हैं ताकि आपको जानना है कि भगवान के पास सात्विक गुण और शुद्ध सात्विक गुण लोग ही जाएंगे। तभी तमोगुण नहीं रहना चाहिए और ऐसे लक्षणों नहीं होना चाहिए। और साधकों को अभी और ज्यादा सावधान रहना है। सबको इस शूद्रत्वं को छोड़ना

चाहिए। यह मत सोचना है कि मैं इस जाति में या उच्च जाति में पैदा हुआ हूँ तो आप महान हैं। कोई भी जाती हो, अगर आप में इन लक्षणों रहते हैं तब आप शूद्रत्वं में ही है।

(2) विप्रत्वं :- विप्रत्वं मतलब उन लोगों को देव भक्ति ज्यादा ही है। यह लोग शास्त्रों को पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं, बहुत कुछ सीखते हैं। वह सीख कर उनको पढ़ने पर बहुत आनंद होता है। दूसरों के बारे में थोड़ा बहुत सोचते हैं। दान, धर्म करते हैं। अपने गांव को भला करने को सोचते हैं।

यहां पर हम देख सकते हैं कि सत्व गुण में जाकर, दूसरों को भला करने को सोचते हैं। और शारीरिक सेवाएं करते हैं। उनको उतना ही मालूम है। क्योंकि शास्त्रों में दान और निष्काम कर्म करने को कहते हैं, मंदिरों में भी भगवान प्रीत्यर्थ कहते हैं, मतलब भगवान को दान गुण इष्ट है, और ऐसे कुछ दान करने को कोशिश करते रहते हैं। इन लोगों का हिंसा प्रवृत्ति नहीं है, क्योंकि सत्व गुण में आने के बाद हिंसा से दूर रहते हैं। यह लोग कैसे होते हैं ? अगर उनसे हो सकता है दूसरों को सहाय करते हैं, नहीं तो चुप रहते हैं। दूसरों को नष्ट नहीं करते हैं।

यहां पर उनको धर्म मालूम रहता है, महान शास्त्रों या भागवत गीता को पढ़ने वालों को थोड़ा बहुत धर्म को समझते हैं। उस धर्म को समझने पर दूसरों पर हिंसा नहीं करते हैं। तब ऐसे इन लोगों विप्रत्वं में रहते हैं। जबकि नीचे जाति में पैदा होते हैं, तब भी विप्रत्वं ही है। मतलब अच्छे गुण रहने वाला विप्र ही है। जिसको हम ब्राह्मण जाति में पैदा हुआ जानते हैं, वह भी विप्र ही है।

(3) ब्राह्मणत्वं :- यह लोग सारे शास्त्रों को अध्ययन करते हैं, उपनिषदों, वेदों, शास्त्रों नहीं पढ़ने तक, द्वैत में रहते हैं। जब वह पढ़ने के बाद समझते हैं तब अद्वैत में आते हैं। जब यह उपनिषदों को पढ़ते हैं, सारे जीवों परमात्मा का ही स्वरुप है को जानते हैं। भगवत गीता में, ‘‘अहमात्मा गुड़ाकेशा’’, को पढ़ने पर भगवान हर एक जीव में आत्मा के रूप में स्थित है को जानेंगे।

यह पढ़ कर आनंद रहना विप्रत्वं है तो, जब एक सदगुरू अपना जीवन में आता है, उनके अंतरार्थ समझ आते हैं। ऐसे लोगों के जीवन में सद्गुरु ही आते हैं। उन सद्गुरु से ही ज्ञान को सीखते हैं। तब से मैं कर रहा हूँ का भाव छोड़कर मुझसे भगवान करवा रहे हैं का भाव में आते हैं।

यह मेरा पूर्व जन्म सुकृत से, मैं पिछले जन्म में अच्छे कर्मों के वजह से ही भगवान मुझे आज भी प्रोत्साहन कर रहा है, मुझे कुछ करने का अवसर दे रहा है, का समझकर इस ब्राह्मणत्वं में साधना, ज्ञान प्राप्त करने को इष्ट रखते हैं। देखिए कुछ लोग अच्छे होते हैं, लेकिन साधना में नहीं आते हैं। अहं ब्रह्मास्मी, तत्वमसी को जानते हैं। लेकिन ध्यान साधना में नहीं आते हैं, साधना नहीं करते हैं।

वह लोग अच्छे कर्म करने से संतुष्ट हो जाते हैं। दान, धर्म करते हैं, लेकिन ब्रह्मा को जानने वाला, ब्रह्मं के लिए तपन करने वाले ही ब्राह्मं के लिए प्रयत्न करने वाले, ही ब्राह्मण है। इस भगवान को पहुंचने के लिए ध्यान साधना ही है, का विषय, भागवत गीता में भी कहा गया है। जब आपको मालूम पड़ेगा कि यह सभी आत्माएं हैं, तब किसी को हिंसा नहीं करेंगे। अहिंसा में ही जीते हैं।

अब देखिए पहले प्रकार के लोग मतलब शूद्रत्वं में रहने वाले लोग को दैव भक्ति या भय नहीं होता है। इसलिए हिंसा में जीते हैं। विप्रत्वं में, लोगों को भगवान है का मालूम है। इसलिए भक्ति में रहते हैं और हिंसा करना पाप है को जानकर अहिंसा में जीते हैं। और ब्राह्मणत्वं में रहने वाले लोग को, सभी आत्मा का स्वरूप है को जानते हैं, इसलिए सृष्टि में किसी जीव को हिंसा नहीं करना है का बड़ा मानस से वह लोग जीते हैं। गुरुओं को, बड़ों को, महात्माओं को गौरव करते हैं। मुझे सब कुछ मालूम है का अहंकार नहीं रहकर, हर एक विषय से अच्छाई को सीखने का कोशिश करते हैं।

तब दत्तात्रेय स्वामी जी सृष्टि में से 24 जीवों से, प्रकृति से, बहुत कुछ सीखा है और एक महान ब्रह्मज्ञानी बना है। ऐसे लोग शांति से, निश्चिंत

से, ब्रह्म तेजस के प्रकाश में रहते हैं।

तब नीचे जाति में पैदा हो, शूद्र जाति में पैदा हो, जो कोई आत्म ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान सीखते हैं, वह लोग ब्रह्मर्षि बनेंगे। जो भी ब्राह्मणत्वं प्राप्त करते हैं, सभी ब्रह्मर्षि होते हैं। अगर देखेंगे तो विश्वामित्र क्षत्रिय जाति में पैदा हुए थे, लेकिन ध्यान कर कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, ब्राह्मणत्वं प्राप्त करते हैं, और ब्रह्मर्षि बन गया था। और मछुआरे के जाति में पैदा हुए मत्स्यग्रंदी का पुत्र व्यास भगवान, ब्रह्मर्षि बनकर उतना महान ब्रह्म ज्ञान प्रपंच को दिया है। ऐसे ही रत्नाकर, एक शिकारी था। वह नारद मुनि से आत्मज्ञान जानकर एक महान काव्य को लिखकर प्रपंच को दिया है।

मतलब नीचे जाति में पैदा होने से भी, परमात्मा पर आसक्ती होने से साधना करते हुए, आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान जानकर ब्राह्मणत्वं को पाकर ब्रह्मर्षी बन सकते हैं। ऐसे ही जो भी साधना कि और मानस निकल जाता हैं, वह सभी ब्राह्मण है, ऐसा कहा है श्री शंकराचार्य जी ने। अभी शूद्रत्वम को घटाना चाहिए और ब्राह्मणत्वं को बढ़ाना चाहिए।

विप्रत्वं में रहने वाले, किताबे पढ़ते हैं, भक्ति बढ़ाते हैं, और सबको पैसे का सहाय करते हैं, लेकिन खुद को ब्रह्म ज्ञान न होने पर, दूसरों को सिखा नहीं पाते हैं। अब यज्ञ और यागों करने को महान समझते हैं। लेकिन पुण्य कर्मों, याज्ञ कर्मों मोक्ष नहीं दिलाते हैं। वेद और वेद अंगों को पढ़ने से सत्य समझ सकते हैं, लेकिन सत्य में नहीं जीते हैं। इसलिए विप्रत्वं से ब्राह्मणत्वं में आना ही चाहिए।

विप्रत्वं में सब पढ़ते हैं, बाद में जब भगवान को जानने का तपन रहने से, उस भगवान ही एक गुरु के रूप में जाकर, भगवान कौन है बताते हैं। तब तक विग्रह में ही भगवान को देखने वाले, आत्मा ही देव है को समझ कर पूजा करना बंद करते हैं। और ध्यान कर कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, ब्राह्मणत्वं में आते हैं।

बहुत लोग आत्मा ही भगवान है को कहने पर भी, विश्वास नहीं करते हैं। तब कुछ लोग को विश्वास होता है, क्योंकि पूर्व जन्म संस्कारों और वासनाएं निकल गए और चित्त शुद्ध हो गया है। अगर पूर्व जन्म वासनाएं नहीं जाते हैं, प्रापंचिक इच्छाओं रहने की वजह से गुरु के बातों को नहीं मानते हैं, विश्वास नहीं रहकर, धैर्य नहीं रहकर, लोग अभी भी पूजा करते रहे हैं।

अगर सत्य को बताने में डर लग रहा है, मतलब मानस के दासी हैं का विषय समझना चाहिए। जब यह ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करते हैं, सभी में वह परमात्मा के रूप में है को समझ कर, सबको प्रेम और गौरव करते हैं।

जब सर्व जीवों को हित चाहते हो, तब सर्वेश्वर संतोष रहता है को जानना चाहिए। जब आप सर्व जीवों आत्म स्वरूप है को अनुभव पूर्वक जब जानेंगे, तब आप सर्व जीवों का हित चाहते हो, इसी को बुद्धा ने विश्व प्रेम कहता रहता है। जिसको विश्व प्रेम नहीं है वह विश्व को बचा नहीं सकता है।

बचाना मतलब युद्ध करना नहीं। हिंसा में रहने वाले लोगों को अहिंसा में लाना। जो समझते हैं कि छोटे जीवों अपने लिए ही पैदा हुए हैं का सोच से, सबके सब आत्मा के स्वरूप ही हैं का समझ कर, अहिंसा में लाना चाहिए। आज पत्री जी भूमि पर आकर मांसाहार खाना कितना गलत है सबको बताया। तभी सब लोग ध्यान सीखते हैं। और दूसरे जीवों को नहीं मारना है और अहिंसा मार्ग में लाने का प्रयत्न किया है।

तब बुद्धा, मलयाल स्वामी जैसे लोग कितना कृषि किया है ? आज पत्री जी भी इतना ही कष्ट कर कर, बहुत लोगों को सात्विक बनाए हैं।

बहुत लोग ध्यान में आते हैं लेकिन कुछ कारणों से वापस चले जाते हैं। भगवान भी प्रकृति द्वारा बहुत परीक्षाएं लेते हैं। मतलब कुछ लोग जो हासिल करने को सोचा है वह नहीं हुआ है करके, और कुछ लोग इसमें बढ़ोतरी हो रहा है या नहीं ना समझने से। यह सभी बातों को छोड़कर सिर्फ जिस दिन गुरु मेरे जीवन में आया है, उस दिन से मुझे ध्यान करना मेरा कर्तव्य है, भगवान को जानना ही मानव जन्म का कर्तव्य है, को समझना चाहिए।

जबकि साधना कर रहे हो अगर आपको आत्मा है का नहीं मालूम हो रहा है, मतलब बीच वाला मानस गंदा है। समझो उस गंदगी को निकालना है। शुद्ध तत्व में रखने के लिए तब वह गंदगी कहां है का विचारण करना चाहिए। मानस क्या बंधन के वजह से गंदा हो गया है ? स्वार्थ गुण से हो रहा है ? या तो मुझ में त्याग बुद्धि नहीं है इसके वजह है ? नहीं तो गुरु का बताने वाला सेवा मार्ग में नहीं हूँ ? हर समय विचारण करना चाहिए।

मैं अभी तक आत्म दर्शन नहीं कर पा रहा हूँ, आनंद नहीं पाया हूँ, मतलब गुरु का कहा हुआ साधना और ज्ञान में कुछ भी गलत नहीं है, मेरे आचरण में गलत है का विषय जानना चाहिए। तब आचरण ठीक रहकर, हिंसा छोड़कर, '' श्वास पर ध्यास'', ध्यान करेंगे, सही ज्ञान प्राप्त करेंगे, ब्राह्मणत्वं को पाकर, ब्रह्मर्षि बनकर भूमि पर बढ़ेगा।

गुरु जिस लक्ष्य से आया है भूमि पर, जो प्रयत्न किया है,शिष्य भी इस लक्ष्य साधना में रहने पर, गुरु का प्रशंसा पाते हैं। तब ऐसे रहने के लिए ध्यान साधना करना चाहिए, ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, विश्व प्रेम रहना चाहिए। तब ब्राह्मणत्वं ही आपका जीवन लक्ष्य है, ब्राह्मणत्वं को आदत रहने से ब्राह्मर्षि बनेंगे।

तब इस तरह जानते रहकर, शूद्रत्वं में जन्म लेकर, ब्राह्मणत्वं से ब्राह्मर्षि बनकर शरीर छोड़ना चाहिए। इस बीच का जीवन लोक कल्याण के लिए ही कष्ट करना है। मतलब ज्ञान पाने के बाद ऐसे नहीं बैठना है। उसको दूसरों को बांटना चाहिए। आपकी लक्ष्य के हिसाब से, आपको अवसरों मिलेंगे। अगर लक्ष्य ही नहीं है तब मौके कहां से मिलेंगे ?

सबसे पहले गुरु का कहा हुआ मार्ग में चलना है, गुरु का कहा हुए कर्मों को करना है। विश्व कल्याण के लिए कष्ट करना चाहिए। हमें लक्ष्य रहना चाहिए। गुरु का बातों सुनने से ज्ञान मिलेगा, साथ-साथ विश्व कल्याण के लिए कष्ट करना भगवान को इष्ट है, जब यह बात जानेंगे तब सब लोग सीख कर सबको सिखाते रहते हैं।

अगर जीवन में विजय हासिल करना है तो ?

इस भूमि पर जीने वाले हर एक व्यक्ति या प्रपंचिकता में, या आध्यात्मिक जीवन में सफल होने को ही सोचते हैं। मतलब हर एक विषय में सफलता या विजय प्राप्त करना चाहता है।

आपके पास शक्ति से छोटे-छोटे इच्छाओं पूरी कर सकते हो। लेकिन बड़े-बड़े इच्छाओं को प्राप्त क्यों नहीं कर पा रहे हैं ? सोचेंगे तो समझ आएगा कि, पहले कमी मैं शरीर हूँ का समझना। जब ऐसे सोचेंगे पहले आपको अहंकार आती है, बाद में इस जगत पर व्यामोह होता है, मतलब जो भी देखते हो उसको चाहते हो।

सिर्फ ज्ञानी लोग नहीं चाहेंगे लेकिन बाकी सब लोग देखने पर वह चाहते हैं। अलग-अलग लोग अलग-अलग प्रकार को चाहते हैं। और नहीं पाने पर दुख रहते हैं। वह परिवार में या व्यापार में या उद्योग में आप बहुत तीव्रता से चाहते हैं और आशा रखते हैं। जब नहीं मिलता है तब वह डिप्रेशन में चले जाते हैं, और सहत खराब होता है।

सिर्फ ज्ञानी लोग सुकून से, आनंद रहते हैं, का विषय हमें समझ आता है। आजकल हर किसी को कुछ ना कुछ दुख है, अनारोग्य से पीड़ित है, क्योंकि उनमें विश्व शक्ति की कमी है।

किसी को भी समस्याएं आते हैं। समस्याओं के वजह से तीव्र आलोचनाएं कर कर, मानसिक रूप से कम जोर होते है, और बीमार हो जाते हैं। समस्त बीमारी का कारण भवोद्वेगों है, को, कह सकते हैं।

आजकल भूमि पर हर एक को स्वार्थ बढ़ गई है। मुझे सुख रहना है, मेरी पत्नी खुशी रहना है, मेरा पति सुख रहना है, मेरे बच्चों सुख रहना है, का स्वार्थ से बहुत निषेध कर्मों कर रहे हैं। निषेध इच्छाओं के साथ रहते हैं। आशाओं का अंत नहीं है, और इन आशाओं को पाने के लिए शक्ति नहीं रहने

से बीमार हो जाते हैं। मतलब उस प्राणशक्ति खो जाने पर उनको सफलता नहीं मिल रहा है।

उदाहरण के लिए कुछ लोग क्लास में पहला नंबर आने के लिए दिन-रात पढ़ते हैं। कभी-कभी नहीं पाते हैं। लेकिन थोड़ा ध्यान करके पढ़ाई करने से जरूर वह विजय प्राप्त करेंगे। क्योंकि ध्यान द्वारा प्राण शक्ति मिलने पर, उनके इंद्रियों को शक्ति मिलते हैं, और जो चाहते हैं हासिल करते हैं।

तब उस प्राण शक्ति बिना, चाहे जितना भी इच्छाएं हो, बेकार हैं। इसलिए शरीर और मानस को उपयोग कर कर छोटे-छोटे कर्मों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन बड़े-बड़े कार्यो को प्राप्त करने के लिए ध्यान द्वारा उस प्राण शक्ति बढ़ाना चाहिए।

जब विवेकानंद जी को विदेशों में जाकर आत्मज्ञान बोध करने को, उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस जी कहते हैं, उनके पास एक भी पैसा नहीं था। लेकिन गुरु का आज्ञा को पालन करना जरूरी है। इतने सारे शिष्यों में सिर्फ मुझे ही क्यों चुना है ? क्योंकि मुझ में वह सामर्थ है, और इसलिए वह जाने के लिए तैयार हो गए थे।

लेकिन उनके पास ज्ञान है, पैसे नहीं है। ऐसे शुरू कर कर कुछ नहीं सोच सका, तब उसने कन्याकुमारी में एक छोटा पहाड़ पर ध्यान में बैठ गया था। आज भी वह मौजूद है, विवेकानन्द रॉक के नाम से वहां कन्याकुमारी में स्थित है।

विवेकानंद जी बहुत ज्ञानी है तभी अपना गुरु का आदेश को पालन किया है। और अपना प्रयत्न कर कर भगवान का शरण में आया है। तब जब अपने आंखें खोले थे, तब वहां एक औरत खड़ी है, उनके सामने उनकी तरफ नजर रखकर ऐसा देख रही थी। वहीं बहन जी निवेदिता है , वह विदेश से आई थी।

भारत देश में बहुत लोग ध्यान करके योगिया बने हैं। तब ऐसे लोगों को दर्शन के लिए आई थी। ऐसे ही पॉल ब्रंटन भी एक समय आया था। तब

होने वाला कार्य को सिर्फ गंधर्व ही पूरे करते हैं। ऐसे एक कहावत है। जब वह अपने आंखें खोले थे तब बहन जी निवेदिता उनसे पूछी थी कि स्वामी जी मैंने सुना है कि भारत देश में योगी लोग भगवा कपड़े पहनते हैं। आप कौन हैं ? आप अभी क्या कर रहे हैं ? आप भी योगी है क्या ? करके पूछी थी। तब विवेकानंद जी ने कहा था कि अपने गुरु जी ने उनको विदेश में जाकर आध्यात्मिकता को बोध करने को कहा था, और मेरे पास पैसे नहीं है। और मुझे कैसे जाना है भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ । ओहो ! तब आप विदेश जाकर बोध करना चाहते हैं। मैं तो यहां योगियों को ढूंढने आया हूँ। मैं खुद ही आपको लेकर जाऊंगा, करके विवेकानंद जी को विदेशों में घुमाकर, अंत में अमेरिका में भी, और भारत वापस आकर यही स्थिर निवास बना कर रह गई थी।

तब इस तरह अपनी शक्ति कम रहने पर, जब ध्यान में बैठते हैं, परमात्मा खुद ही भेजता है जिसको भेजना है। लेकिन प्रापंचिक जीवन में ध्यान न होने से, कुछ भी हासिल नहीं कर पा रहे हैं, करके दुख होते हैं। इसीलिए महात्माओं क्या कहते हैं ? समस्त दुखों के कारण सिर्फ ध्यान नहीं होने पर ही है।

जिसके जीवन में ध्यान होता है, वह विजय प्राप्त करेंगे। और अगर ध्यान करेंगे शक्ति पाएंगे, आप कैसे भी सफल होंगे। शरीर के जरूरी भोगों को भगवान ने दिया है, लेकिन उन्ही को आप लोग भूल गए हैं। तभी यह सारी दुख होता हैं। सच में आप आपके माता-पिता, या पति-पत्नी, या बच्चों आपसे प्रेम करते हैं, का भ्रांति में जी रहे हैं। जबकि सबसे अधिक प्रेम आपसे भगवान ही करता है। चाहे आप भूल भी जाएं। या पर दृष्टि में है, आपके अंदर रहकर हर क्षण बचाता रहता है।

तब ऐसे भगवान को स्मरण करना है तो हमें अनुनित्य ध्यान करना चाहिए। इसीलिए महात्माओं कहते हैं कि जो भी भूमि पर भगवान को प्रेम करते हैं, उनको आत्मा श्रद्धा, आत्मा प्रीति, आत्मा दृष्टि, रहना चाहिए। यह

तीनों रहने पर सर्व जीवों के प्रति प्रेम से, परोपकार बुद्धि से जीते हैं।

आत्मा पर प्रीति का मतलब, भगवान पर प्रीति, भगवान पर प्रीति का मतलब विग्रहों में देव को देखना, प्रसाद और नैवेद्य रखना नहीं है। जब से आध्यात्मिक जीवन में आते हैं, जब गुरुओं आपको मिले हैं, जब से सत्य को जाने हैं, तब उसे आत्मा भगवान है को जानते हैं, तब आत्मा पर प्रीति रहना चाहिए।

इस प्रकार आत्मा पर श्रद्धा रहना चाहिए, श्रद्धा मतलब आत्मा को नित्य पूजा, मतलब हर रोज ध्यान करना ही है। "श्वास पर ध्यास" ध्यान द्वारा नित्य प्राण शक्ति से आत्मा को अभिषेक करना ही आत्मा का पूजा है।

आत्मा दृष्टि मतलब सृष्टि में हम जो कुछ देख रहे हैं, जितना भी महान देखते हो, उतना महत्व देखने का कारण आत्मा ही है। आत्म शक्ति रहने पर ही सब कुछ महान और सुंदर बने हैं करके नित्य भावना रहना चाहिए। यह तीनों मतलब आत्मा पर प्रीति, आत्मा पर श्रद्धा, और आत्मा दृष्टि, जब रहते हैं तब आप आत्मा स्थिति में धीरे-धीरे जाएंगे।

उतना ही नहीं सर्व प्राणियों के प्रति प्रेम दिखाना चाहिए। मतलब सर्व जीवों आत्म स्वरूप ही है को जानना चाहिए। और किसी भी जीव को द्वेष नहीं करना चाहिए। क्योंकि किसी को भी द्वेष करने से भगवान को द्वेष करना समान है। इसी को श्री शंकराचार्य जी ने साक्षी भूत स्थिति, कहा है।

अगर कोई भी बेकार जैसे प्रवर्तन करते हैं, यह लोग मानस के प्रभाव में है को जानना चाहिए। इसलिए आत्मा के बारे में नहीं समझ कर, अनावश्यक विषयों को प्रमुखता न देकर, आत्म शक्ति को वृदा करते हैं को समझ कर, उनको साक्षी भाव से सिर्फ देखकर छोड़ना चाहिए।

अगर वही एक ज्ञानी, एक योगी, एक ऋषि, जब आपको मिलते हैं, मुझे अच्छा मार्ग दिखाने के लिए भगवान ने उनको मेरे सामने भेजा है करके, उसको गौरव करना चाहिए। जब वह ध्यान करके, ज्ञान प्राप्त करने से आपकी दृष्टि में वह अच्छा ही है। दुनिया में अच्छाई को विमर्श करने वाले बहुत होंगे,

करोड़ों में होंगे। और प्रशंसा करने वाले बहुत ही कम होते हैं।

जब आप श्री कृष्ण को देखते हैं, वह अपना सेना को एक तरफ रखा और खुद को एक तरफ रखा है। दुर्योधन को समझ नहीं था, इसलिए श्री कृष्णा को नहीं चुना था। मतलब उसको भगवान जरूरत नहीं है, केवल भगवान का सृष्टि चाहिए था।

लेकिन पांडवों ने भगवान को चाहा और कारण भगवान जहां होंगे वहीं विजय होती है। इस विषय को देखकर हमें समझना है कि कौन भगवान को आराधना करता है, कौन भगवान को प्रेम करते हैं! जो भी भगवान पर दृष्टि रखते हैं, उसको जीवन में सारे विजय ही है।

उदाहरण के लिए कौरवों और पांडवों को हम लेंगे तो, तब भगवान को चाहने वाले सिर्फ पांच ही हैं। भगवान का सृष्टि को चाहने वाले 100 लोग हैं। उतना बड़ा सेना देने के बाद भी 100 लोगों को विजय नहीं मिला, लेकिन श्री कृष्णा अकेले रहकर पांडवों को विजय प्राप्त करवाया है।

धर्म को प्रेम करने वाले बहुत कम लोग रहते हैं, अधर्म को प्रेम करने वाले बहुत लोग रहते हैं। लेकिन जो आत्मा पर, मतलब, भगवान पर प्रीति, श्रद्धा, दृष्टि रखते हैं, उनको सारे विजयों ही प्राप्त करते हैं। आपको अगर किसी में भी सफलता नहीं मिला है, मतलब जैसे गुरु जी ने कहा है, तब आप उस काम करने भूमि पर नहीं आए हैं। आप हजार करोड़ कमाने भूमि पर नहीं आए हैं। वह हजार करोड़ जिससे आ रहा है, उनको जानने के लिए आए हैं। वह आपके अंदर अनु मात्रा ही है, और उसको जानने से सृष्टि पूरा आपके पादक्रांत होंगे।

जब आत्मा प्रीति, आत्मा श्रद्धा, आत्मा दृष्टि रहते हैं, तब भगवान को इष्ट कर्मों ही करते हैं। मतलब सर्व प्राणियों पर प्रेम भाव दिखाते हैं। और सब जीवों भगवान ही है और जीवों को प्रेम करने से ही भगवान आपको प्रशंसा करेंगे, तब से आप अहिंसा मार्ग में चलेंगे।

इस प्रकार परोपकार बुद्धि से जीते हैं। इसीलिए योगियां हर समय सुख पाने को नहीं सोचते हैं, मुझसे दुनिया को क्या अच्छा हो सकता है को सोचते हैं। ऐसे योग जीवन में आप आए हैं। इसलिए भोगने को देखते नहीं है। आपको जो भी दिया है,उनका अनुभव करते ही, योग जीवन में रहना ही मानव जन्म का परमार्थ है। इसलिए सृष्टि में परमात्मा को जानने वाला योगी, ज्ञानी ही असली भोगी है। जब आप नित्य ध्यान करते हुए भगवान पर प्रीति से रहते हैं, भगवान पर दृष्टि और श्रद्धा रखते हैं, तब आप भूमि पर कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

सिर्फ एक योगी को अष्ट सिद्धियां पादाक्रांत होते हैं। सिद्धियां ही उन्हें सब कुछ लाते हैं। पूरी प्रकृति उनका गुलाम बनती है। एग योगी, जो भी शासन करते हैं, वह काम पूरी होगी। इसलिए महात्मा लोग बाहर की दृष्टि कम करके, अंदर के दृष्टि को बढ़ाते हैं, वही विजयों का रास्ता कहलाते हैं।

भूमि पर मैं कुछ हासिल नहीं कर पा रहा हूँ, करके निरुत्साहित होने वाला अज्ञानी होगा, ज्ञानी को मैं हासिल कर सकता हूँ का धैर्य रहता है। जब आप आत्मा से संबंध रखते हैं, तब सारे विजयों ही प्राप्त करेंगे, नहीं तो अगर आत्मा से संबंध तोड़ते हैं, तब आपको सारे पराजयों ही है। जो हर दिन ध्यान करता है, वह आत्मा से संबंध रखते हैं और अगर पत्थरों को और फोटो को पूजा करते हैं, और पुण्य क्षेत्र को जाते हैं, मतलब, आप आत्मा से संबंध तोड़ दिए हैं।

अभी बहुत लोगों को कह रहा हूँ, आत्मा ही भगवान है, ध्यान करने से ही भगवान का आराधना है। लेकिन बहुत लोगों को समझ नहीं आ रहा है, मतलब, उनका अभी अर्हत नहीं पाए हैं।

इस कलियुग में ही विग्रह आराधना आई है। क्यों यह लोग नहीं छोड़ पा रहे हैं ? मतलब ध्यान में आने का अर्हत नहीं है, भगवान को जानने का अर्हत नहीं है। और जैसे गंदा ऐनक में शक्ल दिखाई नहीं देता है, उनके मानस भी ऐसा है, कारण यही है। अगर स्वच्छ मानस नहीं रहता है आत्म

दर्शन नहीं होगा।

वह लोग सत्व गुण में नहीं आए हैं, तभी सत्यम को समझने की शक्ति नहीं है। इसलिए यह सब जानने वाले आप सभी लोग भाग्यशाली हैं। भगवान के कृपा से पत्री जी आपके जीवन में आकर इस अद्भुत आत्मज्ञान दिया है।

इसलिए हर एक ध्यानि को क्या जानना चाहिए? कि आप भगवान की तरफ मुड़े हैं, भौतिक इच्छाओं पाने के लिए नहीं, इससे अधिक आनंद स्थिति सिर्फ भगवान के पास है तभी। हर मानव को आत्मा प्रीति, आत्मा श्रद्धा, आत्मा दृष्टि, रहना चाहिए। जब यह तीनों होंगे भगवान को इष्ट कार्यों, मतलब सर्व जीवों पर प्रेम दिखाते हैं और परोपकार बुद्धि से जीते हैं।

आत्मा को भूलने वाला महान कार्य नहीं कर पाते हैं। आत्मा श्रद्धा रहने वाले बहुत महान कार्यों कर सकते हैं। पत्री जी का शब्दों में उतनी शक्ति है, तभी जब पिरामिड बनाने को कहते हैं वह करते हैं। उसके वाक्य को ब्रह्म वाक्य समझकर, कई सारे शिष्यों वह काम कर रहे हैं।

जब रामकृष्ण परमहंस ने बताया, विवेकानंद जी मना नहीं किया है। मुझे करने का धैर्य है करके आगे बढ़ा है। दैव सहकार उसको मिला था। इसी तरह जब गुरुओं बताते हैं, जब हमारे ज्ञान सीमाओं बढ़ाते हैं, जब हम साधना अच्छी तरह करते हैं, देव किसी रूप में सहाय करता है। मानव का कर्तव्य, मानव धर्म क्या है, भूमि पर शरीर रहते हुए इसको सृष्टि करने वाला को जानना चाहिए। इसके लिए एक ही मार्ग है, जो पत्री जी ने हमें दिया है, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान मार्ग। यही पत्री जी ने हम सबको बोध किया है।

इतने तरीके से हमें जानते रहते हैं, तब भी कभी लगता है कि हमें ध्यान करने से कोई फायदा नहीं है। इस जन्म में आकर थोड़ा सा पुण्य के वजह से इस ज्ञान मार्ग को जाना है। थोड़ा सा ध्यान करने से लाभ नहीं मिल रहा है करके पूछेंगे तो क्या है? उन सारे पापों को धोना है ना? जब आप

सबको निकालेंगे तभी शक्ति बढ़ेगी। तो इसलिए कभी यह मत समझना है कि आपको लाभ नहीं है। ऐसे समझना है कि मुझे कुछ दोष और बाकी है। मुझे शक्ति काफी नहीं है का भाव रहना है। बल्कि ध्यान और गुरु में कमिया ढूंढना नहीं चाहिए।

अगर ऐसा करेंगे मतलब आप और अज्ञानता में चले जाएंगे। ऐसा करेंगे तो परमात्मा को अपमानित करना समान है, क्योंकि परमात्मा के दया से ही हमें गुरु मिला है। वह गुरु ने साधना सिखाया है। इतना ही नहीं, परमात्मा ही इस संदेश गुरु द्वारा मुझे दिया है का आनंद से मंदिर में जैसे प्रसाद स्वीकारते हैं, उस साधना को स्वीकारना चाहिए। और साधना को अपमानित करना मतलब भगवान को अपमान करना समान है।

अगर ऐसा अपमानित करते हैं, तब आपको कोई सफलता नहीं मिलेगी। इसलिए आपको भगवान का कृपा मिलना है तो, जो गुरु भेजा है, उसका दिया हुआ ज्ञान को बढ़ाना है, आचरण करते हुए एक-एक सीढ़ी चढ़ना ही आपका काम है। अंत में आप कौनसे विजय प्राप्त करते हैं? मतलब, आपका आत्मा को सत्यलोक पहुंचाना ही है।

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.. Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद् गीता का सार ।.. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?.. Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।... Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ ।................................ Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ? Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।.. Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?... Rs.100/-
14. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।..................Rs.80/-
15. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।..Rs.80/-
16. आत्म हंतक कौन होता है ।..Rs.70/-
17. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
18. दुख निवारण का मार्ग...Rs.75/-
19. उत्तम पुरूष...Rs.60/-
20. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ? Rs.60/-
21. निर्वाण मार्ग...Rs.60/-
22. सत्य...Rs.50/-
23. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ? Rs.50/-
24. गुरू को पहचानना कैसे ?..Rs.50/-
25. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
26. अलौकिक शक्तियाँ...Rs.50/-
27. शाकाहार ही मानव का आहार है! Rs.50/-
28. ब्रह्मं क्या है ? Rs.50/-
29. संकल्प अर्थात ? Rs.40/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
BHIMAVARAM-534201. CELL: 9490171853, 9440309812

सबसे पहले परमात्मा ने पूरा ज्ञान ब्रह्मदेव को शब्द रुपेना सुनाया था। तभी उनका श्रुतियों कहलाते हैं। ज्ञान, श्रुतियों में रहने से कलियुग में लोगों को नहीं समझेगा करके, पाराशर महर्षि ने ग्रहण किया है। और उन्होंने व्यास भगवान द्वारा उन श्रुतियों को चार विभागों में विभाजन करके लिखवाया, और "वेदों" करके नामकरण किया है।

वेदों का मतलब ज्ञान है। सारे वेदों को चार विभागों में विभाजन किए गए हैं। जब व्यास भगवान इन वेदों बता रहे थे, गणपति लिखते वक्त उसने पूछा है कि इन सबको क्यों लिख रहे हैं? इनका सारांश क्या है? तब व्यास भगवान ने कहा कि, "परोपकाराय पुण्य है, परपीड़न पाप है" ।

व्यास भगवान ऐसे लिखकर नहीं छोड़ा, और अपने शिष्यों द्वारा प्रचार करवाया। वैसे ही पत्री जी ने भी उसने जो भी ज्ञान बोध किया है, सबको, उस ज्ञान प्रचार करने को कहा था। ऐसे प्रचार करने से, (1) प्रचार करने वाला शिष्य को मनन हो जाता है, (2) नए शिष्यों को श्रवण होता है।

कलियुग में सब लोग जो ज्ञान पा रहे हैं, व्यास भगवान के रचनाओं मतलब वेदों, उपनिषदों, ब्रह्म सूत्रों, अष्टादश पुराणों, महाभारत से ही प्राप्त कर रहे हैं। दुनिया में ज्ञान देने वाला व्यास भगवान का जन्मदिन सभी लोगों के लिए त्यौहार है। इसलिए सारे ज्ञानियों को, गुरु पूर्णिमा मतलब, व्यास पूर्णिमा एक महान त्यौहार है।

– ब्रह्मविद्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी

Rs.50/-